श्री श्याम भजनामृत

२१वाँ पुष्प



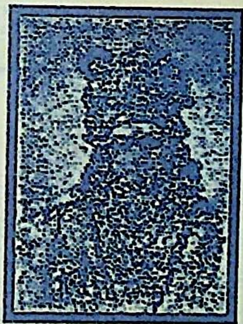
श्री श्याम मण्डल—वाराणसी

।।श्री गणेशाय नमः।।

।।ॐ श्री श्याम देवाय नमः।।

श्री श्याम भजनामृत

इकतीसवाँ पुष्प



प्रकाशक एवं संकलनकर्ता :

श्री श्याम मण्डल

डी. ५२/७ लक्ष्मीकुण्ड (लक्सा रोड), वाराणसी, फोन : २३५६२०२

३२वाँ श्री श्याम झूलनोत्सव
दिनांक- २ एवं ३ अगस्त २००३
स्थान- दाऊ जी उपवन- वाराणसी

मूल्य : अमूल्य

उ०प्र० सोसाइटी एक्ट १८६० के अन्तर्गत पंजीकृत संख्या २२३९,
आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त

श्री श्याम मण्डल संरक्षक मण्डल

श्री शिव प्रसाद हिम्मतसिंहका
श्री महावीर प्रसाद हिम्मतसिंहका
श्री सीताराम पंसारी
श्री शंकर लाल नारसरिया
श्री गोपी कुमार सिंधानिया
श्री सत्य नारायण तोदी
श्री दामोदर शर्मा
श्री गोपी कृष्ण मोरोलिया
श्री बैजनाथ भालोटिया
श्री विजय अग्रवाल
श्री विजय कुमार मोदी

अपनी बात.........

सुहृदय पाठकों

श्री श्याम भजनामृत का 31वाँ पुष्प अपने नये रंग-रूप में आपके कर कमलों में है। प्रस्तुत पुष्प विभिन्न भावों एवं रसों से पूर्ण भजन पंखुड़ियों के संयोजन का किंचित प्रयास मात्र है।

समस्त श्याम प्रेमियों, रचनाकारों, दाताओं एवं शुभेच्छुओं को हम धन्यवाद देते हैं, जिनके सहयोग ने हमें उत्साहित किया, साथ ही उन आलोचकों का भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमारी त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया।

प्रस्तुत पुष्प के सम्पादन एवं प्रकाशन में भूल रहना स्वाभाविक है। अस्तु हम पाठक बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि कृपया भूल सुधार कर पढ़ें।

त्रुटियों हेतु क्षमा प्रार्थना के साथ।

विनीत
गोपाल शर्मा "मगन"
संयोजक– भजनावली प्रकाशन समिति

डिजाइन एवं मुद्रक : आर० के० मल्टीग्राफिक्स
हनुमान कटरा, लक्सा रोड, वाराणसी, फोन : 2302195; मोबा. : 9415287146

श्री श्याम मण्डल कार्यकारिणी - 2003-2005

पद	नाम	फोन प्रतिष्ठान	फोन निवास
अध्यक्ष	श्री सुमन कुमार सिंघी-	2420470	2275367
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	श्री राजकुमार तोदी	2357789	3111425
कनिष्ठ उपाध्यक्ष	श्री रमेशचन्द्र वर्मा	2390507	9839181156
मंत्री	श्री आनन्द लडिया	3100520	9839059444
उपमंत्री	श्री अरूण बैरोलिया	2354456	2275363
कोषाध्यक्ष	श्री दीपक तोदी	2401767	3100456
प्रचारमंत्री	श्री संजय छावछरिया	3103388	2328454
भण्डार मंत्री	श्री दिनेश अग्रवाल	3111176	2275828
कीर्तन मंत्री	श्री सन्दीप शर्मा "कानू"	2400911	2404911
आय-व्यय निरीक्षक	श्री प्रमोद मानसिंहका	2353967	2360753

सदस्य कार्यकारिणी

नाम	फोन प्रतिष्ठान	फोन निवास
श्री गोपाल शर्मा "मगन"	05414-274509	2404911
श्री जगदम्बा प्रसाद तुलस्यान	2404715	2401910
श्री कमल केडिया	9839056743	2420280
श्री काशी नाथ मिश्रा		2224084
श्री महेश कुमार सुरेका	2352359	2400952
श्री पवन कुमार अग्रवाल	3124805	2392794
श्री प्रदीप जैयपुरिया		9839147347
श्री प्रमोद कुमार बजाज	2392909	2328369
श्री पुरूषोत्तम मोहले	2360135	2221677
श्री राजकुमार बूबना	2276875	2404995
श्री राजेश तुलस्यान	2352798	2402898
श्री उमाशंकर अग्रवाल	2354466	2276104
श्री विजय अग्रवाल	2220263	2208163
श्री विजय मोदी	2421399	2404399
श्री विजय पंसारी	9839143712	2326137

सनदी लेखा परीक्षक : श्री विश्वनाथ सोंथलिया (एफ.सी.ए.) 2360030 (प्रतिष्ठान)

अध्यक्ष के उद्‌गार

श्रद्धेय श्री श्याम प्रेमियों,

सादर अभिनन्दन,

विगत १३ अप्रैल २००३ को श्री गोपाल शर्मा 'मगन' के कुशल संचालन, श्री जयप्रकाश गाडोदिया, श्री पुरूषोत्तम मोहले की प्रतिबद्धता एवं श्री विजय मोदी, प्रमोद बजाज के निर्देशन में श्री श्याम मण्डल वाराणसी की प्रबंध समिति का सर्वसम्मत चयन बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ, जो मण्डल के समस्त सदस्यों के समर्पण भाव को प्रदर्शित करता है। श्री श्याम प्रभु की असीम अनुकम्पा से मुझे अध्यक्ष पद का गरिमामय दायित्व प्राप्त हुआ है। बाबा श्याम से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि मुझे श्री श्याम मण्डल एवं इस पद की गरिमा में अभिवृद्धि करने की शक्ति प्रदान करें। वर्तमान मंत्रिमण्डल एवं प्रबंध समिति सदस्यों के रूप में मुझे जो सशक्त टीम मिली है, उसे देखते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि, मण्डल प्रगति के नए आयामों को प्राप्त करेगा। मंत्री श्री आनन्द लडिया की अदम्य इच्छा शक्ति लगन एवं मेहनत, जो श्री श्याम प्रभु एवं मण्डल के कार्य के प्रति समर्पित है, को मैं सादर नमन करता हूँ।

भजन के क्षेत्र में कीर्तन मंत्री श्री संदीप शर्मा "कानू" एवं उनके सहयोगी कड़ी मेहनत तथा उल्लेखनीय प्रयास कर रहे हैं, उन्हें आप भक्तों का भरपूर सहयोग मिलने से इस परिप्रेक्ष्य में भी मण्डल नई ऊँचाइयों को स्पर्श करने में सक्षम है। श्री श्याम झूलनोत्सव २००३ के संयोजक श्री राजकुमार बूबना (विजयानगरम् - भेलूपुर), एवं श्री जगदम्बा तुलस्यान समाज के अनमोल रत्न है। इनके कुशल संयोजन तथा विभागवार सहयोगियों द्वारा श्री श्याम दरबार की जो छटा दाऊजी उपवन में बिखरेगी, उसे काशी की धर्मप्राण जनता तथा श्याम भक्त वर्ष पर्यन्त अपने हृदय में संजोकर रखेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

विगत वर्ष उत्सव संयोजक के रूप में अपने सहयोगियों के साथ विशाल पण्डाल में श्री श्याम झूलनोत्सव आयोजित करने का स्वप्न मैंने देखा था, जो ख्यातिलब्ध कलाकारों की स्वीकृति के अभाव में अपूर्ण रह गया। बाबा श्याम की असीम अनुकम्पा स्वरूप समस्त श्याम प्रेमियों के सहयोग से इस वर्ष वह स्वप्न अपने साकार रूप में हमारे समक्ष है, यही बाबा की महिमा है, तथा इस स्थापित तथ्य की पुष्टि हैं कि, बाबा अपने कार्य स्वयं करता है, हम सभी तो निमित्र मात्र है।

झूलनोत्सव के अर्थ सहयोगी एवं अपने समस्त सहयोगियों की ओर से मैं समस्त दान दाताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने हमारा मान रखते हुए दिल खोलकर हमारा सहयोग किया एवं मण्डल इतिहास के इस विशालतम् झूलनोत्सव बजट को पूरा किया।

हमारे पूर्व अध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल ने अपने कार्यकाल में श्री खाटू श्याम जी में श्री काशीधाम, (विश्राम भवन) के निर्माण हेतु भूमि का क्रय किया, एवं इस योजना को पूर्णता प्रदान करने का बीड़ा उठाया था। प्रतीत होता है कि अब वह स्वप्न साकार होनें का समय आ गया है। आप समस्त श्याम प्रेमियों के सहयोग से प्रस्तावित "श्री काशीधाम" अपने भव्य रूप में पूर्णता प्राप्त कर सके ऐसी बाबा श्याम से प्रार्थना है।

श्री श्याम झूलनोत्सव 2003 के विशेष सहयोगी श्री पद्म जी परसराम पुरिया का आभार व्यक्त करते हुए उत्सव में पधारे समस्त अतिथियों, श्री श्याम मित्र मण्डल कोलकाता, श्री श्याम मण्डल जयपुर, श्री राधे श्याम गोयल दिल्ली, श्री सत्यनारायण सुरेका जयपुर, राष्ट्रीय ख्याति लब्ध भजन-गायन श्री विनोद अग्रवाल एवं बाबा श्याम के चरणों में समर्पित श्री नन्द किशोर शर्मा "नन्दू जी" सहित समस्त भजन गायकों का मैं हार्दिक अभिनन्दन एवं नमन करता हूँ।

कई नामों का उल्लेख छूट रहा है, वस्तुतः सभी कार्य कर्ताओ ने जिस उल्लास एवं सहयोग की भावना से श्री श्याम झूलनोत्सव 2003 में सहयोग किया है। उससे हम सभी अभीभूत तथा आह्लादित है।

अन्ततः दिल की बात करने का यदि बाबा का, आपका आदेश हुआ है तो, हिम्मत कर के बाबा के चरणों में विनती कर रहा हूँ कि मण्डल को ऐसी प्रबंध समिति, अध्यक्ष एवं मंत्री प्रदान करे जो बाबा का झूलनोत्सव, टाउनहाल या स्टेडियम जैसे विशालतम् प्रांगण में आयोजित कर, आपको एवं हम सभी को अह्लादित कर सकें।

सादर जै श्री श्याम

भवदीय

सुमन कुमार सिंघी

(अध्यक्ष)

मंत्री का प्रतिवेदन

श्रद्धेय श्री श्याम प्रेमियों

सादर जय श्री श्याम,

श्री श्याम मण्डल द्वारा आयोजित ३२वें 'श्री श्याम झूलनोत्सव' के शुभ अवसर पर प्रकाशित श्री श्याम भजनामृत, का ३१ वाँ पुष्प श्री श्याम प्रभू के चरणों में समर्पित है। आशा है प्रस्तुत भजनावली में संकलित रचनायें आपको आत्मविभोर करेंगी।

पूज्यवर गुरूजनों के आशीर्वाद, श्रीश्याम प्रभु की असीम अनुकम्पा एवं सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से श्री श्याम मण्डल दिनों-दिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

मण्डल द्वारा विगत ३२ वर्षो से परम्परागत रूप से एंवम् वर्तमान में कीर्तन मंत्री श्री संदीप शर्मा के संचालन में प्रत्येक एकादशी का जागरण, रविवार को भजन संध्या का मंदिर में आयोजन एवम् भक्तों के निवास पर भी बिना किसी लाग के कीर्तन का आयोजन किया जाता है। मण्डल द्वारा भण्डार का भी संचालन भंडार मंत्री श्री दिनेश कुमार अग्रवाल (जगत) जी के नेतृत्व में सुचारु रूप से हो रहा है। मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री दीपक तोदी द्वारा प्रत्येक महीने का लेखा जोखा कार्यकारिणी के सम्मुख रखा जा रहा है, जो कि उदाहरणीय है। विगत गई वर्षो से अधूरे पड़े पंजीकरण को रजिस्ट्रार कार्यालय से इस वर्ष नियमित करा लिया गया है। मैं मण्डल की ओर से इस कार्य को सम्पादित कराने हेतु श्री विश्वनाथ जी सोंथलिया एफ.सी.ए. का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे अध्यक्ष के रूप में अपने बड़े भाई श्री सुमन सिंघी का जो स्नेह मिला है, मैं आजीवन इसे अपने स्मृति पटल पर रखूंगा। विलक्षण प्रतिभा के धनी हमारे अध्यक्ष जी से मण्डल के समस्त सदस्यों को मण्डल के निंरतर विकास की आशा है। वर्तमान में फाल्गुन मास में भक्तों द्वारा खाटूधाम यात्रा, स्थानीय मन्दिर में निशान अर्पण, परम पूज्य श्रद्धेय गुरु जी आलूसिंह महाराज की पूण्यतिथी, नववर्ष स्वागत समारोह, श्रीश्यामजयन्ती, मन्दिर स्थापना दिवस,

गुलाब के फूलों की होली, एवम् श्रीश्यामझूलनोत्सवके साथ-साथ स्थानीय एवं बाहर के मण्डलों के उत्सव में सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की जाती है।

इस वर्ष झूलनोत्सव कार्यक्रम के संयोजक श्री राजकुमार बूबना एवं श्री जगदम्बा तुलस्यान सहित श्री जयप्रकाश गाडोदिया, श्री गोपाल शर्मा "मगन", श्री विजय अग्रवाल, अरुण बैरोलिया, श्री विजय मोदी, श्री प्रमोद बजाज, श्री पवन अग्रवाल श्री विनोद खेमका एवम् अन्य सहयोगियों ने विभागीय समितियों के माध्यम से झूलनोत्सव के कार्यक्रम को जिस निष्ठा, लगन एवं प्रेम के साथ सफलतापूर्वक सम्पादित कराने में सहयोग किया है वह अविस्मरणीय है। झूलनोत्सव के स्वागताध्यक्ष श्री मातादीन जी अग्रवाल एवं श्री रमेश जी चौधरी की आत्मीयता से हम अभीभूत है।

जगत पालक भगवान शंकर की पावन नगरी काशी, जैनधर्म के प्रवर्तक चार तीर्थकारों का जन्मस्थल, योगियों-तांत्रिकों-सिद्धी साधकों, ऐतिहासिक धरोहरों, सैंकड़ों प्रसिद्ध मंदिरों से सुसज्जित काशी, महर्षि पांतजलि, आदिशंकराचार्य, अगस्त्य मुनि, दत्तात्रय, मारकण्डेय, नानक, कबीर, रैदास, रामानन्द, चैतन्य, तुलसी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि महान संतो की आभा से महकती काशी की पावन धरती पर प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष श्री गुरुदेव श्री मोहन दास जी खाटू, श्री श्याम मित्र मण्डल कलकत्ता, श्री सत्यनारायण सुरेका, श्री राधेश्याम गोयल श्री श्याम मण्डल जयपुर, श्री श्याम मण्डल दिल्ली, श्री विनोद जी अग्रवाल मुम्बई, श्री नंद किशोर जी शर्मा (नंदूजी) अहमदाबाद एवम् श्री रघुबीर शेखावटी जयपुर के सहयोग ने हमारे उत्साहवर्धन का कार्य किया है। हम संस्था की ओर से आभार प्रगट करते हुए इन सबके उज्जवल भविष्य की बाबा से कामना करते हैं।

दिनांक ३ अगस्त रविवार को श्री विजय महर्षि के नेतृत्त्व में १२५ जोड़ों द्वारा भगवान शंकर के पावन धाम काशी में सामूहिक रूद्राभिषेक की अनूठी प्रस्तुति के लिए हम समस्त भक्तजनों का आभार व्यक्त करते हैं।

बाबा के आशीर्वाद् एवम् आप सभी के सहयोग से मण्डल अपने उद्देश्यों के सन्तोष जनक निष्पादन में सफलता के कदम चूम रहा है। इसका श्रेय मण्डल के सभी वरिष्ठजनों एवं सभी समर्पित कार्यकत्ताओं को है।

झूलनोत्सव कार्यक्रम हेतु दाऊजी उपवन स्थान उपलब्ध कराने हेतु श्री मातादीन जी अग्रवाल एवम् बाबा के अद्भुत श्रृंगार की मनोरम झांकी प्रस्तुत करने हेतु श्री पद्म कुमार जी परसरामपुरिया का मण्डल हार्दिक आभारी है।

श्री खाटूधाम में, श्री काशीधाम के निर्माण का पावन संकल्प किया गया है। इस कार्य में आप सभी भक्तजनों का सहयोग आवश्यक है।

मैं अपने समस्त सहयोगियों का हृदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोग से श्री श्याम झूलनोत्सव २००३ दाऊ जी उपवन में वर्तमान स्वरूप में आपलोगों के सामने प्रस्तुत है। मैं अपने आलोचकों का भी आभारी हूँ, जिनकी आलोचनाओं की संवेदनाशीलता से मुझे एवं मेरे समस्त सहयोगियों को उत्सव २००३ को अत्यन्त भव्य रूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

मेरे द्वारा जाने-अनजाने में हुई किसी भी त्रुटि के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

आपके सहयोग की आकांक्षा के साथ आपका ही

आनन्द लड़िया

(मंत्री)

संयोजक की कलम से....

आदरणीय श्री श्याम प्रभू के भक्तजन

सादर चरण वंदन

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री श्याम झूलनोत्सव दिनांक 2 एवं 3 अगस्त 2003 को रथयात्रा स्थित दाऊ जी उपवन में भव्य रूप से मनाया जा रहा है।

इस उत्सव के संयोजक के रूप में हम लोगों की नियुक्ति श्री श्याम मण्डल के सदस्यों द्वारा की गई, इस हेतु हम श्याम मण्डल परिवार का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं कि, हमें श्री श्याम प्रभू के चरणों की सेवा का यह अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ।

हम संयोजक गण समस्त श्याम प्रेमियों को यह विश्वाश दिलाते हैं कि इस वर्ष का झूलनोत्सव अपने आप में विशिष्ट महोत्सव के स्वरूप में सबके सम्मुख होगा।

श्री श्याम मण्डल कें अध्यक्ष श्री सुमन सिंघी मंत्री श्री आनंद लड़िया एवं संस्था के समस्त वरिष्ट जन, पदाधिकारी, विभागीय समितियाँ सभी के लगनपूर्वक कार्यों को देखकर हम संयोजकगण आश्चर्यचकित एवं हतप्रभ हैं। जिस तन्मयता से सबका सहयोग हम लोगों को मिल रहा है इसके लिए हम संयोजकगण समस्तजनों का आभार प्रकट करते हैं।

दाऊ जी उपवन जैसे बृहद् परिसर में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कई भजन गायकों ने इस वर्ष आने की सहमति प्रदान की है। दिनांक 3 अगस्त को प्रातः 125, जोड़ों द्वारा सामूहिक रूद्राभिषेक, कलकत्ता के मालियों द्वारा सजावट एवं श्रृंगार यह सब चीजें उत्सव को भव्यता प्रदान कर रही हैं।

झूलनोत्सव के शुभ अवसर पर बाहर से पधारे समस्त अतिर्थियों, श्री श्याम प्रेमियों, अतिथी कलाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं साथ ही आभार व्यक्त करते हैं अपने समस्त सहयोगियों का जिन्होंने उत्सव की सफलता हेतु दिन रात एक कर दिया।

हम लोगों द्वारा जाने-अनजाने में अगर कोई त्रुटि हुई, तो क्षमाप्रर्थी है।

"जै श्री श्याम"

जगदम्बा तुलस्यान *(संयोजक)* राजकुमार बूबना *(संयोजक)*

अनुक्रमाणिका

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री गणेश वन्दना ।।

दोहा : दुंदाला दुःख भंजना, सदा उजाला वेष।
सारा पहली सुमरियो, गौरी पुत्र गणेश।।

(तर्ज : धारा जो बह रही है.....)

कीर्तन की है तैयारी, गणराज आज आवो।
गणराज आज आवो, महाराज आज आवो।
सुर-ताल देने वाले, रंग तो जमाने आवो।।टेर।।

अन्तरा

ज्योति जगी निराली, दरबार है निराला,
झाँकी है प्यारी-प्यारी, सिंगार है निराला-२
थारी ही बस कमी है, रिद्ध-सिद्ध को ले के आवो।।१।।

पूजा तेरी करेंगे, गुणगान हम करेगें,
स्वागत तेरा विनायक, जयकार से करेंगे-२
भजनों के रस में तुम भी, डुबकी लगाने आवो।।२।।

भगतों की शान तुमसे, भगतों की आन तुमसे,
***श्याम मण्डल* हमेशा पाये, सम्मान जग में तुमसे-२**
***सुरेश* है शरण में, रखने तो लाज आवो।।३।।**

।। श्री गणेश वन्दना ।।

(तर्ज : जनम जनम का साथ है......)

आज धणे ही मान सूं म्हे थाने बुलावाँ, म्हे थाने-
आप पधारो हे गणनायक, चोखा सुगन मनावाँ।।टेर।।

अन्तरा

श्याम धणी रो चाव सूं, किर्तन आज कराया।
देवा रे सिरमोर ने, पहल्या पोत बुलाया।
म्हारो किर्तन सफल बनाओ, थारी किरपा चावाँ।।१।।

ऊंचे आसण आज थे, बेगा आन बिराजो।
गाजो बाजो साथ ले, बाँध पागड़ी आज्यो।
बाँध धुंधरा किर्तन मांही, थाने आज नचावाँ।।२।।

भर भर लाडू पेड़ा, चांदी थाल सजाया।
थारे खातिर प्रेम सूं, नागर पान मंगाया।
रे घर रूच रूच जीमो, थारे भोग लगावाँ।।३।।

हर्ष कह्वे थारे बिना, कारज सिद्ध ना होवे।
सेवक नैंण बिछाय कर रस्तो थारो जोवे।
मान राखल्यो म्हारो देवा, म्हे थारा गुण गावाँ।।४।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : भवसिंधू कैसे उतरेंगे पार-)

गुरुदेव आया तेरी शरण, मस्तक लगाऊँ तेरे चरण।
इक तू ही हमारा है, मेरे गुरुदेवा, तेरा सहारा है मेरे गुरुदेवा।।टेर।।

सता रही है दुनिया, बस मतलब का है ये जमाना।
नहीं है कोई अपना, जग सारा है ये तो बेगाना।
धोखे की, ये दुनिया, कोई न हमारा है, मेरे गुरुदेवा।।१।।

पा लिया है तुमको, अब बाकी नहीं कुछ भी पाना।
मेरे स्वामी तुम हो, बस इतना ही मैंने है जाना।
चरणों में, तेरे ही, मेरा गुजारा है, मेरे गुरूदेवा।।२।।

पाऊँ भक्ति तेरी, मेरी विनती सुनो मेरे गुरूवर।
साथ अब ना छूटे, मेरे स्वामी तुम्ही मेरे रघुवर।
राजू भी भक्ति का, तेरा सितारा है, मेरे गुरूदेवा।।३।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : कभी ना कभी......)

चरण तेरे, अरज करे, गुरूदेव शरण में ले लेना,
करूणा कर, अपना लेना,ज्ञान का दीप जला देना,चरण....।।टेर।।

अन्तरा

श्री चरणों में गुरूवर तेरे, ज्ञान का छुपा खजाना है।
बिना ज्ञान नर दर-दर भटके, मिलता नहीं ठिकाना है।
ज्ञान ज्योति की, दीप शिखा से, मन का दीप जला देना, करुणा।।१।।

सन्तों की वाणी समझूँगा, वेदों की गाथा गाऊं।
अन्धियारा तो दूर ही रहे, हरि लीला में रम जाऊँ।
हरि मिले अब, व्याधि मिटे सब, ऐसी जुगत बता देना, करुणा।।२।।

निश्चय अटल बने प्रभु मेरा, सत्य दिशा बढ़ता जाऊँ।
गर्भकाल वादा जो किया, गुरूदेव निभाता मैं जाऊँ।
नन्दू आवण जावण के, फेरे से मुझे बचा लेना करुणा।।३।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : जहाँ डाल डाल पर.......)

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वराय।
गुरुर्साक्षात परब्रम्हः तस्मै श्री गुरवे नमः।।

स्थाई

गुरु देव तुम्हे शत् शत् वन्दन,
तुने जग की करी भलाई,
हमें श्याम की राह दिखाई......२ ।। टेर ।।

अन्तरा

इस भौतिक वादी युग में जब, हमको माया ने घेरा,
जब काम क्रोध मद लोभ ने भोले मन पे लगाया डेरा,
तब आप पधारे गुरुदेव और, ज्ञान की ज्योति जलाई।।
हमें श्याम....।।१।।

है श्याम भजन में रस कैसा ये, आपसे हमने सीखा,
सर्वस्व समर्पण श्याम चरण को, आपमें हमने देखा,
हमें जग के उलझे रस्तों से, भक्ति की रीत बताई।।
हमें श्याम....।।२।।

इतनीं किरपा हम पर करना, नित् श्याम की महिमा गाऊं
जब-२ मन विचलित हो मेरा, तब श्याम शरण में आऊँ,
मन *मगन* उसे गुलजार करें, जो बगिया तून लगाई।।
हमें श्याम....।।३।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

गुरु आलूसिंह जी की, म्हाने याद सतावे है।
छोड़ गया भगतां न, म्हारो हियो भर आवे हैं।।टेर।।

अन्तरा

छोटी सी उमरिया में श्याम को दिवानो बण्यो,
खाटू ने चमन करग्यो जग सारो जाण्यो।
इब कुण भक्त इसो जो म्हाने बणावे है।।१।।

गुलाब और केशर की बिरखा करता था,
मालिक के सागे दरबार न रंगता था।
इब कुण बाबे पे बइयां इत्र चढ़ावे है।।२।।

भरी सभा में थे कीर्तन करता था,
लखदातारी का जैकारा लगाता था।
साँचो है यो दरबार म्हाने कुण बतावे है।।३।।

बीच अखाड़े में थे शंका मिटाता था,
दर्दी कोई हो अर्दास लगाता था।
इब कुण संकट में म्हाने धीर बधावे है।।४।।

श्याम नाम की क्यूँ, म्हारे लगन लगायी थी,
जद थाने जाणे की इतणी खाताई थी।
मन म्हारो लागे ना, कुण राह दिखावे है।।५।।

खाटू से आता थे *श्याम-मण्डल* के बीच,
श्याम से मिलाता थे दोन्यूँ आख्यां मींच।
काशी मं लगाता दरबार, इब कूण लगावे है।।६।।

।। श्री गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : आयो फाग खडण रंग)

हे गुरु देव दयाकर हमको, सत की राह दिखा देना।
श्याम प्रभु से मिला देना ......हे गुरुदेव...... ।।टेर।।

बिन गुरु ज्ञान ज्ञान बिन भक्ती
मिल ना सके चाहे करले युक्ती
शरण पड़े अपना लेना, ज्ञान का दीप जला देना... ।।१।।

ज्ञान दीप से होगा उजाला
ढूंढ़ ही लेगा श्याम हमारा
प्रभु से प्रेम बढ़ा देना, जीवन सफल बना देना--।।२।।

जीवन सफल हुआ जो मेरा
मान बढ़ेगा गुरुवर तेरा
नन्दू मत ठुकरा देना, प्रेम का पाठ पढ़ा देना...।।३।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

(तर्ज : बने हैं याचक कृपानिधान)

हम पर कृपा करो हनुमान-२
प्रभु चरण में भक्ति भाव हो, ऐसा दो वरदान, हम--।।टेर।।
जय हनुमान, जय हनुमान, संकट मोचन कृपा निधान-२

अन्तरा

दया करो सालासर वाले,
राम नाम के हो मतवाले,
जिस पर नजर दया की डाले, उसका हो कल्याण, हम ।।१।।

गांव-गांव और नगर नगर में,
वन उपवन और डगर डगर में,
गली-गली में हर घर-घर में, तेरा है स्थान हम ।।२।।

भक्त शिरोमणि राम दुलारे,
तुझे प्रेम से राम निहारें,
मात सिया की आँखों के तारे, तुम हो देव महान, हम ।।३।।

थोड़ी नजर महर की करदो,
प्रेम भक्ति से गागर भर दो,
हे बजरंगी पूरा कर दो *बिन्नू* का अरमान, हम ।।४।।

।। श्री हनुमान वन्दना ।।

(तर्ज : हमदम मेरे मान भी जाओ....)

छम छम नाचे,बजरंग बाला, नाम जपे श्री राम का,
लाल लंगोटा, लाल ही घोटा, वीर बली हनुमान का।।टेर।।

सागर कूद फलाँग के, सीता सुधि पाये,
द्रोणागिरि पर जाय के, संजीवनी लाये,
हुक्म जब राम का, चाहे जिस काम का,
टलो ना बजरंग बाला से, चाँद सूरज चाहे टल जाये ।।१।।

इस जग में कोई नहीं, आपसा बलवानी,
नांहीं कोई आप सा, भक्ति पंथ ज्ञानी,
ये अंजनि के लला, पवन का लाडला,
विपत जब कोई भी आये, ये संकट मोचन बन जाये ।।२।।

चरणों में अर्जी मेरी, गौर जरा करना,
कष्टों पर पाऊं विजय, वो शक्ति देना,
तेरा सिर हाथ हो, अटल विश्वास हो,
मगन मन तेरी किरपा से, कभी वंचित ना रह जाये ।।३।।

।। श्री शिव वन्दना।।

(तर्ज : देना हो तो दीजिये.....)

शमशानों के वासी हो, भूतों का है साथ,
तेरा गंगा किनारे डेरा-२, ओ बाबा भूतनाथ।।टेर।।
देवो में महादेव हो बाबा, सारी दुनिया ध्याती है,
श्रद्धा से चरणों में तेरे, आकर शीश झुकाती है,
जो पाँव पकड़ले तेरे-२, तू पकड़े उनका हाथ।।१।।
सृष्टि के ओ सिरजनहारे, तेरे ढंग निराले हैं,
देवों की रक्षा की खातिर, पीते विष के प्याले है,
हम भोले भगतों का तूं-२, रक्षक है भोलेनाथ।।२।।
सोमवार को तेरा दर्शन, बहुत बड़ा शुभकारी है,
तेरी दया से हम भगतों की, कटती विपदा सारी है,
इस हर्ष का भोले बाबा-२, तूं देना हरदम साथ।।३।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : ये गोटेदार लहंगा..)

सेवक लाये है भंगीया, भोले बाबा छान के
भर-भर के लोटा पीले, मस्ती में तान के।।टेर।।
बड़े जतन से होले-होले, भांग तेरी घुटवाई-२
केशर पिश्ता खूब मिलाया, छान लेई ठन्डाई-२
हमरी भी रख ले बतिया,-२ सेवक तु जान के भर-भर के.........।।१।।
गोरा मैया के हाथो से भांग सदा तू खाये-२
तेरे सेवक बड़े चाव से, आज घोंट कर लाये-२
सावन की बून्दे थिरके-२ रिमझिम की ताल पे भर-भर के.........।।२।।
और देव होते तो लाते भर-भर थाल मिठाई-२
लेकिन भोले बाबा तुझ को भांग सदा ही भाई-२
हर्ष दया का भोले-२ हमको भी दान दे भर-भर के.........।।३।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : इंजन की सीटी में म्हारो मन डोले)

डमरू शंकर जी को डम डम डम बाजै,
डमरू को धुन सुन देव नाचै।।टेर।।
शीश गंग अर्धंग पार्वति, कटि में चर्म बिराजै,
शीश पै जिनके चंदा सोहे हाथ त्रिशूल बिराजै,
डमरू सुनकर शेर संग मोर नाचै।।१।।
नंदिश्वर की सजै सवारी, देख काम शरमाता,
काशी में बैठा है भक्तों देखो भाग्य विधाता,
डमरू सुनकर मुनि संग चोर नाचै।।२।।
हे अविनाशी घट घट वासी, तेरे दरश की प्यासी,
इन अँखियों की प्यास बुझाओ जनम जनम की प्यासी,
डमरू सुनकर मन का मोर नाचै।।३।।
सावन में शंकर का डमरू, जब बजता है भक्तों,
बालाजी तो आते संग में, लगे अखाड़ा सन्तों,
श्याममण्डल में राधा का चित्त चोर नाचै।।४।।

।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : जनम जनम का साथ है.....)

सांस सांस में बसा रहे, प्रभु नाम तुम्हारा-२
कभी ना छुटे हम भक्तों से, महादेव ये द्वारा।।टेर।।
तेरे हाथों सौंपी मैंने, मेरी जीवन की नैया।
इस दुनिया के भोले, तुम ही हो खिवैया।
तेरी महिमा गाता भोले, ये संसार सारा।।१।।
कृपा तुहारी भोले, जन्मों जन्मों पाऊँ।
पल पल तेरे ही गीतों को,भोले सदा मैं गाऊं।
तेरा मेरा नाता भोले, जग में हो ये न्यारा।।२।।

औघड़ दानी भोले, तुमसा कोई ना दाता।
बिन मांगे ही तुमसे, भक्त तुम्हारा पाता।
देव दयालू दे दो हमको, आशीर्वाद प्यारा।।३।।

भक्ति चरणों की हमें, दे दो भोले न्यारी।
तेरे ही चरणों सदा, जायें हम बलिहारी।
जी गया वो जग में राजू शिव चरणों जो हारा।।४।।

।। श्री दुर्गा वन्दना।।

अम्बे जगदम्बे जय-जय अम्बे जगदम्बे
कोई माता जी न ध्यावै, सदा सुख पावै
काई जातीड़ा रे हिरदे म्हारी आदि भवानी बसेहै।
गोरा की रानी बसे है..........अम्बे जगदम्बे।। टेर।।

अन्तरा

जे कोई आवे तेरे मात बिलखती, अँखिया नीर बहाता।
सूने-सूने आँगणियाँ में पालणियों झुलवावे, अम्बे।।१।।

दर से तेरे कोई जावे न खाली , जो भी आवे सवाली।
खाली-खाली झोली ल्यावे, भर-भर के ले जावे....अम्बे।।२।।

जातीड़ा तेरे नित की आवे, जात जडुला ल्यावे।
तारा जड़ेड़ी लाल चुनरिया, लहर-लहर लहरावे....अम्बे।।३।।

हँसता गाता देख टाबरिया, मन ही मन मुस्कावे।
सुखी रह्वे परिवार यो थारो, आशीर्वाद सुनाव....अम्बे।।४।।

भरे रे भंडार जगत को माता, मन इच्छा फल देवे।
दामोदर या तेरी महिमा हरष-हरष कर गावे......अम्बे।।५।।

।। श्री सती वन्दना ।।

जैसा चाहो मुझको समझना, बस तुमसे है इतना कहना
माँगने की आदत जाती नही, तेरे आगे लाज मुझे आती नही....।टेर।

बड़े-बड़े पैसे वाले भी, तेरे द्वारे आते हैं।
मुझको है मालूम कि वो भी, तुमसे माँग के खाते है।
देने में तूं हिचकाती नही, माँ-२ तेरे आगे..... ।।१।।

तुमसे मईया शरम करू तो, और कहाँ मैं जाऊंगा।
मैं अपने परिवार का खर्चा, और कहाँ से लाऊंगा।
दुनिया तो बिगड़ी बनाती नही, माँ-२ तेरे आगे...... ।।२।।

तू ही करती मेरी चिन्ता, तो ही गुजारा चलता है।
कहे *पवन* मां तुमसे ज्यादा, कोई नहीं कर सकता है।
झोली हर कहीं फैलाई जाती नहीं, माँ-२ तेरे आगे... ।।३।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

सावन की बरसे बदरिया, माँ की भींगी चुनरिया।।टेर।।

लाल चुनड़ मां की चमचम चमके,
माथे कि बिदिंया, भी दम-दम दमके,
हाथों में झलके मुन्दरिया, माँ की भींगी चुनरिया ।।१।।

छाई हरियाली, झूमे अम्बुआ की डाली,
होके मतवानी, कूके कोयलिया काली,
बादल में कड़के बिजुरिया, माँ की भीगी चुनरिया ।।२।।

ऊँचा भवन, तेरा ऊँचा ही डेरा,
कैसे चढूं पाँव फिसले है मेरा,
टेढ़ी-मेढ़ी है डगरिया, माँ की भीगी चुनरिया ।।३।।

काली घटा, पानी भर-भर के लाई,
झुला-झुले, देखो जगदम्बा माई,
चंचल पे माँ की नजरिया, माँ की भीगी चुनरिया ।।४।।

।। श्री दुर्गा वन्दना ।।

(तर्ज : जहाँ मैं जाती हूँ वहीं चले आते हो....)

सारा जहाँ तुझे ढूँढ़ के हारा, पाया नहीं मैया तेरा द्वारा
ये तो बताओ कि तुम, बसी हो कहाँ, ये तो बताओ कि
तुम छुपी हो कहाँ-।।टेर।।

ओऽऽऽऽऽ तेरी महिमा न जानी, महिमा न जानी
हार गये माँ ऋषि मुनि ग्यानी, वेदों में ब्रह्मा ने तुमको ही ध्याया।
शिवशंकर ने ध्यान लगाया, ये तो बताओ कि तुम--।।१।।

ओऽऽऽऽऽ दर पे अरजी हमारी, मरजी तुम्हारी,
देखूँ मैं तेरी शेर सवारी, श्रद्धा के फूलों का हार बनाऊं
चरणों में मइया तुमको चढ़ाऊं, ये तो बताओ कि तुम-।।२।।

ओऽऽऽऽऽ कहाँ धाम तुम्हारा, धाम तुम्हारा
त्रिभुवन में माँ नाम तुम्हारा, चारो युग में तुम को ही ध्याते
कहते अपना पंथ बताते, ये तो बताओ कि तुम-।।३।।

ओऽऽऽऽऽ मैं हूँ लाल तुम्हारा, लाल तुम्हारा
एक झलक माँ देदो नजारा, अपने हृदय में तुमको बसा लूँ
नैनों में अपने तुमको छुपा लूँ, ये तो बताओ कि तुम।।४।।

।। श्री सती वन्दना ।।

(तर्ज : बहुत प्यार करते हैं........)

लगी मन में मइया तुम्हारी लगन।
जुदा हमको करके ना, ढाना सितम, लगी-।।टेर।।

नयन के झरोखे में छवि है समाई,
दिल की ये धड़कन तुम्ही से है पाई,
तेरा साथ तो ये मन है मगन, लगी मन....।।१।।

मिटा दो हमारे अज्ञान मैय्या,
ज्ञान की गंगा, बहा देना मैया,
तुझे तेरे भक्तों ने ये दी है कसम, लगी मन......।।२।।
दरबार तेरा मेरा है ठिकाना,
चरण में तुम्हारे मेरा आशियाना,
शरण में तुम्हारी ही निकल जाये दम, लगी मन.......।।३।।
कीचड़ से मैय्या *कमल* को निकालो,
ऐहसान होगा चरण में सजा लो,
श्याम मण्डल तेरा करे सुमिरण्, लगी मन.........।।४।।

।। श्री सती वन्दना ।।

(तर्ज : जवन बात बा सँवरको में.....(भोजपुरी))

हमरे मइया के दुअरिया पे जे आई हो।
ओकरे भगिया क रेखिया बदल जाई हो।।टेर।।
माई और बेटा क त, नाता पुरान बा।
जप तप न साधन बाटे, अवगुण क खान बा-२
जिन पर माई क नजरिया भी पड़ जाई हो, ओकरे..... ।।१।।
बीच भँवर में, फँसल बाटे नइया।
मइया के बिना कोई, नाही बा खेवइया-२
बदरिया बिपतिया के कट जाई हो, ओकरे...... ।।२।।
कोढ़िया के मिलि जइहैं, निरमल काया।
अन्हरा के अँखिया और, निर्धन के माया-२
बाँझिन के अंचरवा भी भर जाई हो ओकरे...... ।।३।।
भर द हमार मइया, झोली बाटे खाली।
लौटल ना तोहरे दर से, कोई भी सवाली-२
परशुराम के भी बिगरल कमवाँ बन जाई हो ओकरे......।।४।।

।। श्री सती वन्दना ।।

माँ है भक्तां की लाडली भजसी सो पासी रे
हाँ भजन बिना यो मानव जीवन बिरथा जासी रे।।टेर।।
मैया पट खोले झट से, जो ध्यावे सो ही पावे रे,
राणी सती तो है जगमाता, पल में खुश हो जावै रे,
भजले भइया पल दो पल माँ आयी आसी रे, मां है-- ।।१।।
मैया के दरबार में जाके, खाली कोई न आवै रे,
शरण में जाकर के माता के, जीवन सफल बनावै रे,
रोली मोली भेंट चढ़ा माँ खुश हो जासी रे, मां है-- ।।२४।।
सब कोई मिल कर प्रेम से बोलो, जय मैया जय दादी
के कहणों माँ की ममता को, सोई ज्योति जगादी
करल्यो किर्तन दादी का मां दरश दिखासी रे, मां है--।।३।।

।। श्री पित्तर वन्दना ।।

(तर्ज : होठों से छू लो तुम..)

पितरों के एहसां को हम भूल न पायेंगे।
चरणों में पितरों के बलिहारी जायेंगे।।टेर।।
पित्तरों के कारण ही दुनिया में आये हम।
सदा दूर किये सारे पित्तरों ने हमारे गम।
पित्तरों की महिमा हम हरदम ही गायेंगे।।१।।
भूलों के लिये हमको करो माफ पित्तर देवा।
करूणा करो पित्तर जी कर पायें हम सेवा।
तेरे नाम के दीपक को दुनिया में जलायेंगे।।२।।
पित्तर जी भक्ति का वरदान हमें देना।
कर पायें जग सेवा वो ज्ञान हमें देना।
राजू तेरी भक्ति का हम फूल खिलायेंगे।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मैं चली पिया के गाँव...(विनोद अग्रवाल))

दोहा- क्या छवि वरणूं आपकी, खूब बने हो नाथ।
चित में ऐसी चाह है, मिल ल्यूं भर कर बांथ।।

स्थाई

देखो लगा श्याम दरबार, मगन हम नाचेगें
नाचेगें हम नाचेगें,
गूंजे की जय जय कार सजन हम नाचेंगे....।।टेर।।

अन्तरा

रूच रूच कर दरबार सजाया, दूर दूर का भगत बुलाया,
होगी भजनों की बौछार, मगन हम नाचेगें।।१।।

कोई लाया झांझ नगारा, कोई लाया इतर फुहारा।
कोई लाया फूलों का हार.......मगन हम।।२।।

रिमझिम रिमझिम सावन बरसे,तेरे दर्शन को मन तरसे।
हमें आपकी है दरकार, मगन हम नाचेगें।।३।।

आ भी जाओ श्याम बिहारी, बाट जोहते सब नर नारी।
हो जा नीले पर असवार, मगन हम ....।।४।।

दीवानों की है ये बस्ती, इनकी मस्ती बिलकुल सस्ती।
देखो आए श्याम सरकार, मगन हम.......।।५।।

किरपा की छांया यूँ रखना,हर मन *मगन* बनाए रखना।
ऐसे निभता रहे व्यवहार, मगन हम....... ।।६।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मारवाड़ी)

कानहा धीरे झूलो पागड़ी पलट जायेगी।
थारै माथा रो मुकुट यो पलट जावै लो,
थारी मोत्यारी या लुमा झूमा टूट जावै ली कान्हा धीरे...।।टेर।।

झूला पड्या कदम की डार, झूलै राधा नन्द कुमार,
आई सखियाँ कर शृंगार, देखण झूलन की बहार,
सारै भक्तां की नजर थारै लाग जावै ली, कान्हा...।।१।।

भक्तों *श्याम मण्डल* मं चालो,आयो नन्द जी को लालो,
यानै प्रेम से रिझाल्यो, यानै पलकां मं छिपाल्यो,
प्रेम भाव सै पलक थारी भीग जावै ली, कान्हा....।।२।।

आयो खादू को सिरदार, बैठ्यो काशी कै बाजार,
यो है सब यारां को यार,यां रो जीवन भर को प्यार,
करले इणसे तूँ रूजगार रोजी चाल जावैगी, कान्हा..।।३।।

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे बिजली चमके जोर जोर,
दादुर मोर पपीहा बोले भँवरा करे किलोल,
राधा रानी की पचरंगी चुनर भीग जावैगी, कान्हा...।।४।।

खुल रह्यो बाबा को भण्डार लुटावे लख दातार,
दासी मत होवै लाचार, तेरो सच्चो इनसूँ प्यार,
पल्लो देखले बिछा के थैली खुल जावैगी, कान्हा....।।५।।

०

।। श्री श्याम वन्दना ।।

ओऽऽऽऽ जिसका साथी है बाबा श्याम,
उसको क्या रोकेगाऽऽऽऽ आँधी और तूफान।।टेर।।

गगन चूर हो जाये जमीं चाहे, सागर में धंस जाये
तूफानों की गोद में चाहे, सारा जग सो जाये,
पाँव न रूकने पाये ओऽऽऽऽ जिसका साथी।।१।।

जिसके शीश पर हाथ प्रभू का, छू ना कोई पायेगा
श्याम नाम से ये पर्वत भी, तिनका बन जायेगा
धूल में मिल जायेगा ओऽऽऽऽ जिसका साथी।।२।।

भक्त और भगवान का बन्धन, है दिपक और बाती
इसी ज्योत में ये जलती है, इसी में है मिल जाती
देह अमर हो जाती ओऽऽऽऽ जिसका साथी।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

सावणियों सुरंगो आयो, झूलन की बहार है,
हरी-हरी बाग सुहाणा झूला पड़्या कदम की डार है ।।टेर।।

अन्तरा

बादल गरजै बिजली चमकै, ठंडी पड़ै फुहार है,
झूला झूलै राधिका, झुलावै नन्द लाल है, सावणियो।।१।।
चम्पा और चमेली खिल रही, खिल रही केशर क्यार है,
ललिता गोपी झूम झूम कर, गावै राग मल्हार है, सावणियो।।२।।
देखो सखियों रास रच्यो है, नाच रह्यो संसार है,
मधुर मनोहर बंशी बजाकर, नाच कृष्ण मुरार है, सावणियो।।३।।
दावण पहर लहरियो ओड्यो, गल मोतियन को हार है,
बन्द, बंगडी और कुण्डल सोहे हीरा जड़्या अपार है, सावणियो।।४।।
हाँथां मेंहदी लाल रची, पग पायल की झणकार है,
चालो ए सखियो निरखण चालो राधा कर्यो सिणगार है, सावणियो।।५।।
श्याम मंडल का घाल्या हिण्डोला, झूलै लखदातार है,
दामोदर मधुसूदन मोहन, लीला तेरी अपार है, सावणियो।।६।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : कान्हां रे कान्हा)

आया मैं आया बाबा मैं तो आया
तुझे अपना हाल दिखाने, सोई तकदीर जगाने
तुझे अपना श्याम बनाने, तुझे दिल से श्याम रिझाने, आया।।टेर।।

कहते हैं लोग तुझे लखदातारी,
खाटू के श्याम बाबा संकटहारी,
मेरे संकट दूर भगादे, मुरझाए फूल खिलादे,
रोते को श्याम हंसादे, प्रभु प्रेम सुधा छलकादे, आया--।।१।।

दीनजनों का बाबा, काम बनेगा,
श्याम तुम्हारा, डंका बजेगा,
मेरी नैया पार लगादो, मुझे साहिल तक पहुँचादो,
कुछ चमत्कार दिखलादो, हारे को जीत दिलादो आया--।।२।।

नन्दू तुम्हीं से बाबा, अरज लगाई,
तेरे पास आके मेरी, आँखे भर आई,
इस निर्बल को अपनाले, चरणों का दास बनाले,
हिवड़े में ज्योत जगादे, मुझे अपना दरस दिखादे,आया--।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दरबार निरालो.....)

किस्मत रंग ल्याई, सांवरियों आयो घर पावणो।।टेर।।

संग म लेकर देवी देवता श्याम धणी घर आया।
हरषी धरती गूंज्यो अम्बर, ऐसी धूम मचाया जी, किस्मत........।।१।।
भांत-भांत क फुलां सूँ प्रभु कंचन हार बणाया।
गजरो पहरों श्याम धणी म्हे, थासूं अरज लगाया जी, किस्मत....।।२।।

कितनो सुंदर कितनो प्यारो यो दरबार सजाया।
रतन सिंहासन बैठो बाबा, मंगलाचार गुवाया जी, किस्मत......।।३।।

जगमग-जगमग ज्योत जगी जग मं उजियारो छायो।
बाबा थारे दर्शन खातिर, सारो कुणबो आयो जी, किस्मत......।।४।।

म्हें हाँ थारां थे हो म्हारा, जनम जनम गुण गावां।
नन्दू भरद्यो सबकी झोली, हर पल मौज उड़ाया जी, किस्मत ....।।५।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : हमने तुमसे प्यार किया.....)

ऐसा भाया रूप साँवरा तेरा, मैं तो बन गया तेरा......२।।टेर।।

श्यामल श्यामल, छवि तुम्हारी, मेरे मन को भाए।
नैणों से, करूणा का सागर, नेह सुधा छलकाए।
हार गया मैं, दिल सांवरिया, कैसा जादू फेरा, मैं तो--।।१।।

हँसता है तूँ, चुपके चुपके, मोहक हंसी लुटाए।
कर मुरली, अधरों पे तेरे, मीठी तान सुनाए।
तान रसीली, ऐसी प्यारी, झूम रहा मन मेरा, मैं तो--।।२।।

कितना दयालु, कितना पावन, कैसा तेज सवाया।
भूला मैं तो, सुख-दुख अपने, ऐसा मस्त बनाया।
इतनी दया बस, कर सांवरिया,मन में करो बसेरा, मैं तो.।।३।।

रखना ऐसी, महर सदा ही नन्दू अरज लगाए।
अपनी कहना, मेरी सुनना, और नहीं कुछ चाहें।
अपने रंग में रंग सांवरिया, तूँ भी बन जा मेरा, मैं तो--।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : कभी दामन छुड़ा लिया......)

स्थाई

ये कैसा निखार है, मनभावन श्रृंगार है,
ओ कान्हा रेऽऽऽऽ, किसने सजा दिया,
तुम्हें तो दूल्हा बना दिया।
तेरी चितवन, खींच ले मन-२, कान्हा रेऽऽऽऽ ।।टेर।।

अन्तरा

गले वैजयन्ती माला, शीश पर मुकुट निराला।
तन पे पीताम्बर धारे, फिरे गोकुल में ग्वाला।
सारी दुनिया को भरमा दे, तुम्हारी बांकी ये चाल है।
तेरा काजल, कर दे घायल-२, ओ कान्हा रेऽऽऽऽ ।।१।।

छत्र सिंहासन सोहे, द्वार पर नौबत बाजा।
साँचा दरबार लगाए, बैठा खाटू का राजा।
भीड़ भक्तों की है भारी, ये बाबा तेरा कमाल है।
तेरी किरपा, की है चरचा-२, ओ कान्हा रेऽऽऽऽ ।।२।।

ज्ञान की गागर हो तुम, दया के सागर हो तुम।
जो तेरे दीवाने है, शमा के परवाने है।
आपकी करूणा और किरपा,आपके अनुपम श्रृंगार है।
ये *मगन* मन, तेरे अर्पण-२, ओ कान्हा रेऽऽऽऽ ।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

स्थाई

ॐ श्री श्याम देवाय नमः ॐ श्री श्याम देवाय नमः।
महामंत्र का जाप करो, अपने मन को साफ करो, ॐ श्री।।टेर।।

अन्तरा

महामंत्र की कर भक्ति, तुमको मिल जाये शक्ति।
आत्मबल बढ़ जायेगा, इससे सरल नही युक्ति।
सबको बताओ आप करो, महामंत्र का जाप करो, ॐ श्री।।१।।

जब आत्मबल बढ़ जाये, सुख दुख की चिन्ता छूटे।
मोहमाया सब मिट जाये, सच्चा सुख तूं फिर लूटे।
प्रभु से सभी मिलाप करो, महामंत्र का जाप करो, ॐ श्री।।२।।

जीवन नैया गर भटके, काम यदि तेरा अटके।
इस मंत्र की कर रटना, मिट जाये सारे खटके।
प्रभु सबके संताप हरो, महामंत्र का जाप करो, ॐ श्री।।३।।

ऋषी मुनी भी गाते हैं, इससे सब कुछ पाते है।
जो गायेगा पायेगा, अनबोले रह जाते है।
मौका है जी साफ करो, महामंत्र का जाप करो, ॐ श्री।।४।।

महामंत्र कल्याणी है, वर देता वरदानी है।
सर्वशक्ति का पुंज है ये, सबने बात ये मानी है।
स्वर में यही अलाप करो, श्याम सुन्दर संग जाप करो, ॐ श्री ।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मांगने की आदत जाती नही......)

कोई जीते कोई हारे, कोई न समझे खेल तुम्हारे,
तू चाहे जैसा, होता वही है तेरे आगे जोर कोई, चलता नही है।।टेर।।

समय से पहले भाग्य से ज्यादा, तूँ ही तो दे सकता है।
बिन पानी भक्तों की नैया, तूँ ही तो खे सकता है।
नादान है जो समझता नही है....तेरे आगे.... ।।१।।

तूँ चाहे तो पर्वत को मिट्टी में मिलते देर नही।
पत्थर पर तूँ दूब उगादे, इसमें कोई फेर नहीं।
मूरख को पण्डित बनाता तूँ ही है....तेरे आगे.... ।।२।।

जिसके दिल में प्रेम की गंगा, सदा हिलोरे लेती हैं।
एक दिन उस पर प्रेम की वर्षा, सृष्टि भी कर देती है।
जो जैसा बोता, पाता वही है....तेरे आगे.... ।।३।।

तेरे लिखे को सेठ सांवरे, कोई मिटा नही पाएगा।
नन्दू हो जा मस्त सांवरा, हर उलझन सुलझाएगा।
उजाला अंधेरे को, सुहाता नहीं है....तेरे आगे.... ।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : खाटू को श्याम रंगीलो....)

चाकरियो मिलबा आयो जी सांवरिया।।टेर।।

सुण सुण थारै नाम को डंको,
नाम का डंको थारै नाम को डंको,
दरशन करबां आयो जी सांवरिया, चाकरियो .... ।।१।।

सेवा मँ थारै अणगिण चाकर
अणगिण चाकर-थार अणगिण चाकर
उण में जुड़बां आयो जी सांवरिया,चाकरियो..... ।।२।।

दरश करांगा नित सेवा करांगा,
सेवा करांगा नित सेवा करांगा,
नन्दू रूतबो भायो जी सांवरिया चाकरियो..... ।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज- तुम अगर साथ देने का .....)

तेरे चरणों के काबिल अगर हम नही।
हमको काबिल बनाना तेरा काम है।।टेर।।

तुमने दुनियां रची, दुनियां वाले रचे।
तुमने गीता रची, ग्रंथ सारे रचे।
वेद ग्रंथो के काबिल अगर हम नहीं,
हमको काबिल बनाना तेरा काम है...तेरे चरणों के ....।।१।।

तुमने भक्ति रची, ध्यान वंदन रचे।
तुमने माया रची, मोह मत्सर रचे।
ध्यान वंदन के काबिल अगर हम नहीं,
हमको काबिल बनाना तेरा काम है... तेरे चरणों के ....।।२।।

श्याम कलयुग विकट सदा करे खटपट।
जीव लाचार है नन्दू फंसे झटपट।
इनसे लड़ने के काबिल अगर हम नहीं,
हमको काबिल बनाना तेरा काम है... तेरे चरणों के ....।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अच्छा सिला दिया....)

दानियों में गूंज रहा नाम आपका।
दीनों को सम्भालना है काम आपका।।टेर।।

दानियों में दानी, तू देव दातार है,
आजा ओ, दयालू हमें तेरी दरकार है।
प्यासे प्यासे नैणों में, उजाला आपका, दीनों को....... ।।१।।

हमसे हमारी नाव, नहीं चल पाएगी,
आए जो ना तुम, तो ये नाव डूब जाएगी।
तूँ ही पतवार प्रभु, मेरी नाव का, दीनों को....... ।।२।।

तुमसे उम्मीद हमें तेरा ही सहारा,
लीले घोड़े वाले तूंही मेरा किनारा।
मुझे तो भरोसा प्रभु बस आपका, दीनों को........ ।।३।।

दुनिया सराय, मतलब का डेरा,
चेहरे पे चेहरा, नजर का फेरा।
होता रहे शोर नन्दू बिन बात का, दीनों को......... ।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सर पे टोपी लाल)

बागो रंग बिरंग, रंग सू हिवड़ उठी उमंग,
बाबाजी थारा क्या कहना।।टेर।।

सुंदर सलौणी सूरत, मन मं बसाल्यू मूरत, छवि मन भा गई।
कजरारा नैण रसीला, नीरस का मन भी डोला, लगन लगा गई।
नैणां बरसै प्यार, प्यार मं तन मन देऊं वार....बाबाजी....।।१।।

दर्दी को दर्द मिटगो, ऐसी मस्ती मं रमगो, बेसुध सो हो गयो।
नाच नचावण लाग्यो, श्याम नं रिझावण लाग्यो,चमत्कार हो गयो।
ऐसी लागी लगन, लगन मं बन्दो हुयो मगन....बाबाजी....।।२।।
मदन मुरारी थे हो,केशव गिरधारी थे हो,भगतां की शान हो।
कृष्ण कन्हैया थे हो,बंशी बजैय्या थे हो,खाटू वाला श्याम हो।
कलयुग को के जोर, जोरमं थारो कांई होड़....बाबाजी....।।३।।
नन्दू सुण श्याम बिहारी, म्हासूं भी करल्यो यारी, लाड लडावांगा।
नित की सजास्यां थानै, प्रेम सूं जिमास्यां थानै, सेवा भी बजावाँगा।
पांवा थारो साथ, साथ मं भजनां री बरसात.....बाबाजी....।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : थोड़ी किरपा करदे सांवरा)

मैं जनम जनम गुण गाऊगां, अब बाबा श्याम तुम्हारा।
तेरी दया से धन्य हो गया, जीवन श्याम हमारा।।टेर।।

निश्चय अटल बनाओ प्रभु मेरा।
हर पल ध्यान रहे प्रभु तेरा।
तेरे ही रंग में तेरे संग में बीते जनम हमारा, मैं जनम जनम .....।।१।।

नैणों में हमारे श्याम प्यारे बस जाओ।
रूप रसीला श्याम हमें दरसाओं।
मेरे मन पे, मेरे तन पे, लिख दे नाम तुम्हारा,मैं जनम जनम.....।।२।।

महिमा तुम्हारी श्याम सबको सुनाऊँगा।
नित नए भजनों का हार मैं बनाऊँगा।
ऐसा वर दे, किरपा करदे, झूम उठे जग सारा, मैं जनम जनम...।।३।।

नैया के खिवैया तुम मेरे आधार हो।
दीन कमजोर के तुम्हीं तो श्रृंगार हो।
कर लिया नाता तुमसे ही दाता-नन्दू तुझपे वारा,मैं जनम जनम..।।४।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

पलकें ही पलकें बिछाएँगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएँगे
हम तो हैं कान्हां के जन्मों से दिवाने रे...२
मीठे मीठे भजन सुनाएँगे जिस दिन श्याम प्यारे घर आएँगे॥टेर॥

घर का कोना कोना, मैंने फूलों से सजाया।
बन्दनवार बंधाई, घी का दीप जलाया।
प्रेमी जनों को बुलाएंगे, जिस दिन श्याम....॥१॥

गंगाजल की झारी, प्रभु के चरण पखारूँ।
भोग लगाऊँ लाड लडाऊँ आरती उतारूँ।
खुशबू ही खुशबू उड़ाएँगे, जिस दिन श्याम....॥२॥

अब तो लगन एक ही मोहन, प्रेम सुधा बरसादे।
जनम लनम की मैली चादर, अपने रंग रंगादे।
जीवन को जीवन बनाएँगे, जिस दिन श्याम....॥३॥

नटवर नागर नन्द का लाला, मुरली मधुर बजावे।
नन्दू प्रेमी नाच नाचकर, गिरधर को रिझावे।
नैणों से नैणां मिलाएँगे, जिस दिन श्याम....॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

खाटू में दरबार, लगाकर जग को पालन हार,
साँवरो बैठ्यो है, जी बैठ्यो है॥टेर॥

सैंक घट-घट की यो जाणैं सांचो प्रेम प्रभु पहचाणैं,
कर ले इणसूं प्यार, बंदा यो यारां रो यार, साँवरो॥१॥

ऐं की दया को पार नहीं है खुशियां को दातार यो ही है,
तन मन इण पर वार, बणज्या इणको ताबेदार, साँवरो॥२॥

इनकी दया सै थो अणजाण्यो,शरणागत बन कर ही जाण्यो,
है सांचो दिलदार, नन्दू जीवन देवै संवार, साँवरो॥३॥

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : उड़े जब जब......)

मेरा श्याम बड़ा रंगीला, मस्ती बरसेगी-२ कीर्तन में।।टेर।।

कोई श्याम को रिझाकर देखे, उमरिया सुधारेगी, कीर्तन में।।१।।

कोई श्याम को सजाकर देखे, खुशबू महकेगी, कीर्तन में।।२।।

कोई आँख लड़ाकर देखे, धड़कन मचलेगी, कीर्तन में।।३।।

कोई श्याम को नचाकर देखे, मुरलिया गुंजेगी, कीर्तन में।।४।।

नन्दू चलो भजन सुणावां, चदरिया निखरेगी, कीर्तन में।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सुनो हसीना....)

राधा की पायल छम-छम बाजे,
छम-छम बाजे पायल राधा रानी नाचे,
श्याम ने छेड़ा तराना, राधा का श्याम दीवाना।।टेर।।

राधा जब पायल छमकावे,
कानूड़ो झट दौड़्यो आवे,
करे ना कोई बहाना, राधा का श्याम।।१।।

हरी-भरी धरती हर्‌यो उपवन,
गूंज रह्यो सारो वृन्दावन,
गूंज रहा बरसाना, राधा का श्याम।।२।।

गौरवरण की राधा प्यारी,
सांवली सूरत कृष्ण मुरारी,
ज्यूं शम्मा परवाना, राधा का श्याम।।३।।

नन्दू भज श्री राधे-राधे
राधेजी श्री श्याम से मिला दे,
प्रेम का मंत्र सुहाना, राधा का श्याम।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सुहाना सफर...)

बुलालो हमें अपने चरणों में तुम,
मेरे श्याम जी मेरी अरदास सुन।।टेर।।

तुम्हारे चरणों में आकर कहेगें,
मेरे दाता हम यही पे रहेगें।
कोई रोके, कोई टोके, गायेगें तेरे ही गुण - बुलालो--।।१।।

तुम्हारे चरणों की धूली जाने पायें,
हम अपने जीवन को धन धन मनाए।
मेरा तन मन, तेरे अर्पण, फिर काहे का गम - बुलालो--।।२।।

मगन ये कहता है चरणों में झुक के,
दर्शन दे दो मुझे चुपके चुपके।
मेरी अर्जी, तेरी मर्जी, लगी है दर्शन की धुन - बुलालो--।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सजन रे झूठ मत बोलो......)

तुम्हारे ही चरण में अब, लगन मैंने लगाई है।
जमाने से कहा मैंने, यही सच्ची कमाई है।।टेर।।

संभी झुठा है अफसाना, सभी को एक दिन जाना,
तू इतना जान ले बन्दे, तू इतना जान ले बन्दे
ये सांसे सब पराई हैं, तुम्हारे--।।१।।

तु किसको कहता हे मेरा, यहाँ कोई नही तेरा
सभी स्वारथ के मारे हैं, सभी स्वारथ के मारे हैं
करें क्यों जग में हँसाई है, तुम्हारे--।।२।।

तू आजा श्याम शरणों में, ले भक्ति मांग चरणों में।
तेरा ही जन्मों जन्मों का तेरा ही जन्मों जन्मों का
हुआ राजू कन्हाई है, तुम्हारे --।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : जाने क्यूँ लोग.....)

दोहा : बाबा सब कुछ मांगल्यो जो कुछ मेरे पास।
दो नैणा मत माँगियो, थारे दरश की आशा।।

श्याम का नाम मुझे मस्त बना देता है
श्याम सागर में, डूब जाता हुँ मै,
दर्दे गम दिल के भूल जाता हूँ मैं, श्याम का--।।टेर।।

अन्तरा

जब भी पुकारु मैं, मेरे बन्शी बजैय्या को,
हर बार देखा है, मेरे हमदम कन्हैया को।
होश रहता नही, कुछ भी कहता नही,
तान मुरली से गजब की, सुना देता है - श्याम का--।।१।।

कई बार तो ये दिल, बड़ा गमगीन होता है।
उस वक्त सावरियां, मेरे नजदीक होता है।
होश रहता नही, कुछ भी कहता नही,
मीठी मुस्कान से दिल को, लुभा लेता है - श्याम का--।।२।।

मैं याद में उसकी, सभी कुछ भूल जाता हूँ।
लेके उसी का नाम, खुशी के गीत गाता हूँ।
श्याम सरकार है वो, बड़ा दिलदार है वो।
आज *बनवारी* तुझे दिल से, दुआ देता है - श्याम का ।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दुनिया बनाने वाले......)

बंशी बजाने देखो, आये कृष्ण कन्हाई।
भक्तों ने महिमा गाई, भक्तो ने महिमा गाई।।टेर।।

राधा को संग में लेके आये कन्हैय्या
काशी में रास करते रास रचैया।
मोहन की बंशी राधा-राधा पुकारे,
राधा की आरती माँ अम्बे उतारे।
जन्मों जन्मों की कर ली, भक्तों ने पुण्य कमाई, भक्तों --।।१।।

खादु से आये कान्हा उत्सव मनाने,
कान्हा के चरणों बैठे भक्त दिवाने।
नजरों से कान्हा ने भक्तों को देखा,
भक्तों की बदली पल में किस्मत की रेखा।
भक्तों ने किस्मत अपनी चरणों में चमकाई, भक्तों- ।।२।।

भक्ति का दान सबको आज मिलेगा,
भक्ति का फूल सबके मन में खिलेगा।
भक्ति की करूणा से झोली जो भरले,
जन्मों जन्मों को जीवन अपना वो तर ले।
भक्तों के संग भक्ति पाये राजू कन्हाई, भक्तों --।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : राजस्थानी)

कानुड़ो न जाणे म्हारी प्रीत-२,
माईरे मै तो बाल कंवारी रे
माईरे मै तो अखन कंवारी रे, कानुड़ो न जाणे......।।टेर।।

मै तो भरण न गई जल जमुना न-२
कानुड़ो उछालो ठंडो नीर
सो नीर ज्याग्यो-सा-र-र-रे कानुड़ो न जाणे......।।१।।

मैं तो न्हावण नं गई जल-जमुना न-२
कानूड़ो मचायो खींचा-खींच
यो चीर फाड़्यो चर-र-र-रे कानुड़ो न जाणे......।।२।।

मै तो गई जी बागा फूल तोड़न न-२
कानुड़ो चलायो नैणा तीर
ओर तीर ल्याग्यो-घर-र-र-रे कानुड़ो न जाणे....।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

मुरली वाले कृष्ण कन्हैय्या, आ-आ-आ,
भरी सभा में द्रोपती रोती, आके लाज बचा।
ओ राधेश्याम, राधेश्याम-२।।टेर।।

खीच रहा है, चीर हमारा दुस्सासन अन्यायी,
देख रहे है सभा के अन्दर पाँचों पाण्डव भाई,
कैसे अपंन इज्जत बचाऊ, आके आज बता,भरी सभा में .....।।१।।

सौ पुत्रों के बीच में कैसी , ये जुवे की बाजी,
रक्खा गया दांव पत्नि पर ये कैसी अन्यायी,
नाथ दयामय इस अबला को दिल से ना भुला,भरी सभा में .....।।२।।

सुन करके द्रौपदी की करूणा, धाये मदन मुरारी,
भरी सभा में आ करके प्रभु चीर बढ़ाये मुरारी,
समय-समय पर आकर के तूं मुझको गले लगा,भरी सभा में ......।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अंखियों को रहने दे.....)

सांसो की सरगम पे, जपना है एक नाम,
जै श्री श्याम, जै श्री श्याम, जै श्री श्याम, जै श्री श्याम
सांसो की सरगम पे ।।टेर।।

जीवन की राहों में, सुख दुख मिलते,
बाबा की कृपा बिना, फूल नहीं खिलते,
चैन यही मन का, जिन्दगी का ये आराम, जै ......।।१।।

मीरा दीवानी हुई, सांवरे को पा लिया,
नरसी की भक्ति ने, सबको दिखा दिया,
खुद को समर्पित कर, पाओगे सुख का धाम, जै ......।।२।।

होगी सुनाई तेरी, धीरज ना तू गंवा,
दीनों पे किरपा करना, सांवरे की है अदा
मन में लगन हो तो, खुश होंगे बाबा श्याम, जै ....।।३।।

अपने *मगन* मन को सांवरे पे वार दे,
बाबा की किरपा से जीवन संवार ले,
जपता चला चल तूँ, करते रहो सद्काम, जै ....।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ दिल के सहारे तुझे......)

ओ सांवरे मेरी समझ में ये बात न आई,
करनी थी जो तुमसे वो बातें कैसे भुलाई ओ सांवरे......।।टेर।।

बुनकर के बात दिल में, तेरे पास मैं आया,
तुमसे कहूँगा सांवरे, पर कह नहीं पाया-२
जानें क्या हुआ मुझको, सुध मैंने भुलाई, ओ सांवरे...... ।।१।।

इब बैठ मेरे घर में, यही सोच रहा हूँ,
लिखकर के दिल की बात, तुम्हें भेज रहा हूँ-२
फुरसत मिले गर आपको, पढ़ लेना कन्हाई, ओ सांवरे...... ॥२॥

आंखों में क्या कशिश है, गजब है तेरा जलवा,
दीवाना बना देता, तेरे प्यार का जजबा-२
जानें क्या असर हो गया, सब देते दुहाई, ओ सांवरे.......॥३॥

तूँ साथ अगर है तो, मैं हंस के जी लूँगा,
वरना सहूँगा सांवरे, गम हंस के पी लूंगा-२
नन्दू हजारों दर्द हैं, तूं बनजा दवाई ओ सांवरे....... ॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : प्यार हुआ इकरार हुआ.....)

सॉवरा अब आ भी जा तुझे भक्तों ने बुलवाया है ।
तेरे स्वागत के खातिर अद्‌भुद दरबार सजाया है॥टेर॥

दरबार में खड़े है हम, राहें तेरी निहारते,
छूटे सहारे हैं सभी, तेरा नाम ही पुकारते,
सामने आजा, धीर बँधाजा, किस्मत जरा सँवार दे,
आ भी जा साँवरा, साँवरा आ भी जा, साँवरा....॥१॥

आजा तेरी छवी को मैं, निज नैनों में उतार लूँ,
तेरे चरण की धूल से, अपने करम सँवार लूँ,
राह बुहारूँ चरण पखारूँ, तेरी आरती उतार लूँ,
आ भी जा साँवरा, साँवरा आ भी जा, साँवरा.......॥२॥

दर्शन मिलेगें एक दिन, ये मन में विश्वास है,
बातें बनाए कोई कुछ, मुझको मिलन की आश है,
आश पुरा दे, दर्श करा दे, *मगन* करे अर्दास है,
आ भी जा साँवरा, साँवरा आ भी जा, साँवरा....... ॥३॥

।। श्री श्याम वन्दना ।।

फैसला दरबार का, सांवले सरकार का,
मंजूर है, मंजूर है, मंजूर है, मंजूर है।।टेर।।

हमने देखी तेरी अदालत, चलती नहीं किसी की वकालत,
ये है दर इन्साफ का........।।१।।

जबसे हमने तुमको माना, तेरी शक्ति को पहचाना,
तूँ है मसीहा आज का.........।।२।।

तेरी मर्जी मेरी अर्जी, हमको परवाह नहीं किसी की,
है ये रिश्ता प्यार का..........।।३।।

हमको तेरी शरण रहना है, *बनवारी* फिर क्या डरना है,
मैं हूँ सेवक आपका...........।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

कभी न कभी, कहीं न कहीं, मेरा श्याम सलोना आयेगा।
अपना मुझे बनायेगा, जीवन ज्योति जगायेगा।।टेर।।

आशा लगाये कब से बैठे, श्याम तुम्हारे चरणों में।
नित तेरा गुणगान करे हम, गली गली और घर घर में।
नैन दरस के प्यासे हैं ये, कब तूँ दरस दिखायेगा ।।१।।

कब तक गुण गायें हम तेरा, इतना तो बतलावो तुम।
गीता में जो वादा किया था, उसको आन निभाओ तुम।
चरणों की धूली पाने से, जीवन सफल हो जायेगा।।२।।

हे त्रिपुरारी सुन लो हमारी, हाथ जोड़ करते विनती।
जो जो जो पाप किये हैं हमने,उनकी मत करना गिनती।
रे मन मूरख दर-दर की, प्रभु कब तक ठोकर खायेगा।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : वो दिल कहां से लाऊं......)

इस योग्य हम कहाँ है, भगवन तुम्हें मनायें।
फिर भी मना रहें शायद तूं मान जाये।।टेर।।
जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा।
सद्‌बुद्धि को अहम् ने हरदम रखा दबाये।।१।।
जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
एक दूसरे के सुख से, खुद को बड़ी जलन है।
कर्मों को लेखा जोखा, कोई समझ न पाये।।२।।
जब कुछ न कर सके तो, तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें।
बस दरश तूँ दिखादे, कुछ और हम न चाहें।।३।।
निश्यच ही हम पतित है, लोभी हैं स्वार्थी है।
तेरा नाम जब पुकारे, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो ना पाये।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

आओ तो आओ हरि, किस विध थे देर करी,
सभा है भरी, भीड़ पड़ी, आओ तो आओ हरी।।टेर।।
दुष्ट दुशासन वंश विनाशन, खैंच रह्यो मेरे तन को वासन,
नगन करण की, मन में धरी, आओ तो आओ हरी।।१।।
भीष्म पितामह द्रोण गुरूदेवा, बैठे विदुर जी धर्म के खेवा,
सभी की मति में धूर पड़ी, आओ तो आओ हरी।।२।।
पति मोहे हारी यह न विचारी, कैसे सभी बिच आयेगी नारी,
बाजी हुई है कपट भरी, आओ तो आओ हरी।।३।।
हाथ पसारूँ आन उबारो, कोई न सहारो बेगा पधारो,
देवकीनन्दन बना बिगड़ी, आओ तो आओ हरी।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

श्यामा तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाये।
सच कहता हूँ मेरी, तकदीर बदल जाये।।टेर।।
सुनते है तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
इक बून्द जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये।।१।।
ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूं।
जितना इसे समझाऊं, उतना ही बदल जाये।।२।।
नजरों से गिरना ना, चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाये, वो कैसे सम्हल पाये।।३।।
राधे इस जीवन की बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, और प्राण निकल जाये।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

खाटू वाले मुझे बुला ले, एक बर खाटू धाम, आरसो थारो है।।टेर।।
कृष्ण कला अवतारी तूँ, भक्तों का हितकारी तूँ।
मात वचन हिय धारी तूँ, भीम पुत्र बलकारी तूँ।।
शीश के दानी महा बलदानी, राख दास की आन, आसरो....।।१।।
मीरा के घर श्याम गयो, दूध को प्यालो तुरत पियो।
जहर को अमृत बना दियो, श्याम नाम ले मीरा पियो।।
मीरा हो गई अमर नाम ले, राख दास की आन, आसरो....।।२।।
नरसी जी की टेर सुनी, टूटी गाड़ी ठीक करी।
नानी बाई को भात भर्‌यो, भक्त की इच्छा पूरी करी।।
खाटू वासी, सब सुख रासी, राख दास की आन, आसरो....।।३।।
लाखो को तुमने तारे, बड़े-बड़े कारज सारे।
मन इच्छा फल सब पाते, जो आवे तेरे द्वारे।।
अटल *चिरंजी* द्वार पड़ा है, राख दास की आन,आसरो....।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : हुस्न वाले तेरा.......)

श्याम बाबा तेरा जवाब नहीं,
कोई तुमसा दयालू देव नहीं।।टेर।।

तेरी मस्ती मिली श्याम जिसे, उसकी तकदीर का भी क्या कहना,
तेरी किरपा जरा सी हो जावे, मुझे दुनियाँ से और क्या लेना,
मेरा दावा तुम्हारे बारे में, कोई तुमसा दयालू देव नहीं।।१।।

जाने कितने ही प्रेमियों को प्रभु, अपने बन्धन में बाँध रखा है,
कैसे टूटेगा प्रेम का रिश्ता, तेरा धागा बड़ा ही पक्का है,
मैं नहीं ये जमाना कहता है, कोई तुमसा दयालू देव नहीं ।।२।।

तूँ है ऐसा दयालू देव प्रभु,अपनी मस्ती में कुछ भी दे डाले,
कोई तुमसा नहीं है दिलवाला, हमनें देखें है लाखों दिलवाले,
हमने बनवारी दिल से मान लिया, कोई तुमसा दयालु देव नहीं।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

बनड़ो सो लागे म्हानैं, यो बाबो श्याम धणी दातार।
किण ने. सजायो, जी यो सिणगार बनड़ो सो.....।।टेर।।

कुणं तो लगायो तेल उबटणों,सांवरो कन्हैयो लागो गोरो घणों,
लागे ना नजर लेवो नजर उतार, बनड़ो सो.... ।।१।।
काजलियो आख्यां में भावै, मेहन्दी हाथां में मुस्कावै,
लेऊँरे बलैया, लागे राजकुमार, बनड़ो सो...... ।।२।।
साजे तन पे केशरिया सूट, सोवणों सो लागे मोर मुकुट,
दुल्हे राजा देखो, लीले घोड़े पर सवार, बनड़ो सो..... ।।३।।
काशीराम जी बनड़ो गावै, *श्याम मण्डल* जयकार लगावै,
चाल्या रे बराती होवे, फूलां की बौछार बनड़ो सो..... ।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : नजर के सामने, जिगर के पास......(आशिकी))

तेरे द्वार आ गयो, मेरे श्याम-श्याम-श्याम।
चरण की छाँव में, बिठाले आज.....।।टेर।।

सारे जब में भटक्यायो, ना ओई हिए लगायो,
दुनियाँ की ठोकर खाके, तेरै द्वारे आयो,
हूं शरण में उठा, कालजै से लगा.......चरण की....।।१।

दुखियाँ का दुख मेटो हो, बोलै दुनियाँ सारी,
हर कोई बोलै ना देख्यो, थां जैसो दातारी,
सारा दर पर खड्या, अब खजानो लुटा...चरण की....।।२।।

लाखाँ का कारज सार्या, इब के आफत आई
मेरी बरियाँ ही दाता, निठुराई क्यूँ छाई
मेरा दोष भुला, नाँही दे अब सजा......चरण की.....।।३।।

किरपा थारी मिल जावै, हर चिंता मिट जावै,
श्याम-मण्डल दर पर थारै, नित्य *मगन* हो गावै,
प्रेम धारा बहा, हाथ सिर पर फिरा.....चरण की.....।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : भाया रे कर लीज्यो......)

दाता ओ कद म्हाने दरश देवोला।
दरश देवोला, म्हारै मन की करोला।
कद म्हारी आस पूरोला दाताओं--।।टेर।।

बेगा-बेगा आवो थारा टाबर तरसै।
बिरहा की मारी म्हारी अखिया तरसै।
खावे म्हारो जीव हिचकोला।।१।।

सगो ना सम्बन्धी कोई जग माहीं म्हारो।
म्हानै तो सहारो दाता बस एक थारो।
कद म्हारे हिवड़े बसोला।।२।।

हर्‌यो भर्‌यो जग सारो खुशियां को मेलो।
सूनो-सूनो डोले म्हारो जीवड़ो अकेलो।
कद म्हाने आन मिलोला।।३।।

बाटड़ली जोवत आधी रात गुजरगी।
दुखीयारै भक्तां सूं म्हारी पोली सारी भरगी।
कद तांई धीर धरोला।।४।।

देख भगतां न दुःखी आयो खाटू वालो।
झूमे नाचे गावे मनहर होकर मतवालो।
बोल्यो बाबो कांई थे लेवोला।।५।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : अफसाना लिख रही.......)

सांवलिये तेरा मुझको, दीदार हो जाये,
उजड़ा चमन, फिर से मेरा, गुलजार हो जाये।।टेर।।

कैसे चलेगी मोहन, तुफान में नैया-२
हो जाये एक इशारा-२, भव पार हो जाये।।१।।

ख्वाईश मेरे जीवन की, ज्यादा बड़ी नहीं-२
बस तेरी किपा मुझ पर-२, इक बार हो जाये।।२।।

खाली नही जाऊंगा, जिद पे अड़ा हूँ श्याम-२
देखूँ दयालू कैसे-२, इन्कार हो जाये।।३।।

करदे मुरादें पुरी, बस इतना सोचकर-२
बनवारी मुझे भी तेरा-२, ऐतबार हो जाये।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : चुप-चुप खड़े हो जरूर कोई बात है।)

श्याम-श्याम जपे जा यही एक सार हैं,
सच्चा मुक्ति द्वार है जी सच्चा मुक्ति द्वार है।
जो ना भजे तो सच्चा समझले
मिट्टी तेरी ख्वार है जी मिट्टी तेरी ख्वार है, श्याम- ।।टेर।।

हरी सुमिरन कर मीरा बाई तर गई,
गौतम की नारी अहिल्या भी तर गई,
सुवा पढ़ावत गणिका भी तर गई,
यही सच्चा सार है जी यही सच्चा सार है, श्याम-।।१।।

वाल्मिकी तर गए, तुलसी भी तर गए,
भक्ति के कारण, नरसी भी तर गए,
धन्ना भक्त और नन्दा नाई भी तर गए,
यही सच्चा सार है जी यही सच्चा सार है, श्याम-।।२।।

भजो हरि को गिरधर गोविन्द को,
केशव कन्हैया नट नागर को,
मातृदत तुम भजो हरी को,
यही सच्चा सार है जी यही सच्चा सार है, श्याम-।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : आवारा हवा का झोंका हूँ......)

दरबार में आकर दाता के, हम दर्द सुनाना भूल गये।
देखे जो हजारों दीन दुखी, हम अपना फसाना भूल गये।।टेर।।

अश्को से भरी लाखों आँखे, बेचैन सी है कुछ पाने को।
संसार समन्दर के माँझी, क्या नाव चलाना भूल गये।।१।।

जाने पहचाने मुद्दत के, प्रभु आशा लेकर आये हैं।
क्यों चाहने वालों को अपने, सीने से लगाना भूल गये।।२।।

कहीं चीर बने बड़ वीर बने,निज भक्तों की तकदीर बने।
हे दीन बन्धु क्या गीता के, वादे को निभाना भूल गये।।३।।

क्या भिलनी गीध अजामिल भी, और सहजो मीरा सुदामा।
क्या छप्पर अपने हाथों से, नामू का छँवाना भूल गये।।४।।

श्री श्याम बहादुर भक्त बड़े, दरबार के प्रेम पुजारी थे।
दाता से वहीं *शिव* का नाता, क्या नैन मिलाना भूल गये।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं.....(साजन)

भिखारी कन्हैया, तेरे दर का हूँ।
दामन बिछाया है, कुछ भी मिले, भिखारी.....।।टेर।।

लाखों की तुमने, बिगड़ी बनाई,
मेरे समय क्यूँ, अँखिया चुराई,
ये दिल्लगी तेरी, कैसे सहें, भिखारी.......।।१।।

दिल की हकीकत, किसे मैं सुनाऊँ,
दर छोड़ तेरा, मैं किस द्वारे जाऊँ,
तुम ना सुनोगे तो, सुनाए किसे, भिखारी.....।।२।।

अपने हमारे, रूठ चुके हैं,
आँसू ये नैनों के, सूख चुके हैं,
अब ये लकीरें, दिखाऊँ किसे, भिखारी.......।।३।।

जुदाई मैं तेरी, सह ना सकूँगा,
तुझसे बिछड़ कर, रह ना सकूँगा,
चरणों में *कानू* बिठाले मुझे, भिखारी......।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : जिसे देख मेरा दिल धड़का....

मेरा श्याम बाँसुरी वाला, सबके दुख हरता है,
खाटू में है धाम मगर, सबके दिल में, वो रहता है....।।टेर।।

अन्तरा

सबसे निराला बाबा मेरा, दानी नहीं कोई इनसे बड़ा,
भक्तों ने जब भी पुकारा इसे,नीले पे सज कर हाजिर खड़ा।
बच्चे किस हाल है यह, वो देखता रहता है.....खाटू में.....।।१।।

भक्तों की आँखों का नूर है, प्रेम के मन से ना दूर है,
भरती है खाली झोली यहाँ, दरबार साँचा मशहूर है।
झोली फैला कर देखो, ये क्या क्या देता है.....खाटू में.....।।२।।

भटके जो मन उसको थाम ले, लखदाता का मन से नाम ले,
किस्मत का लिक्खा बदल जाएगा, दाता के चरणों को थाम ले,
चमकेगी किस्मत तेरी, ये विश्वास मगन का है.....खाटू में... ।।३।।

०

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अब तीर चले तलवार चले)

तुने खूब दिया सब भक्तों को, अब आज हमारी बारी है।।टेर।।

थोड़ा-थोड़ा देने से काम ना चले, मुझको तो आज जी भरकेमिले।
बहुत दिनों इन्तजार किया, बाबा ने माँगने का मौका दिया।
ये सोच ले तूँ, ये जान ले तूँ, अब आज हमारी बारी है।।१।।

माँगते है श्याम तुम से इतना, मेरा गुजारा चलता रहे।
तेरा दिया हुआ खाता रहूँ, बस तेरा दर्शन मिलता रहे।
चाहे कुछ भी करो, इन्कार न करो, क्योंकि आज हमारी बारी है।।२।।

ांगने में मेरा जाता है क्या, बाबा से जी भर के माँगूगा।
लवारी इतना ले जाऊंगा, माँगने दुबारा न आऊँगा।
ड़ा ध्यान रखना, मेरी बात रखना, क्योंकि आज हमारी बारी है ।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : म्हारी सगी जी कामणगारी.....

आज सज्यो सिणगार निरालो,
खाटू वाले की छवि न्यारी, छवि पे जाऊं बलिहारी ।।टेर।।

अन्तरा

श्याम सलोणो मुखड़ो दमके ।
मस्तक माँही हीरो चमके ।।
सिर पर छत्र हजारी, छवि पे..... ।।१।।

मोर मुकुट सिर बाँको सोहे ।
बाँकी चितवन मनड़ो मोहे ।।
बाँकी ही चाल तिहारी, छवि पे...... ।।२।।

फूलाँ से सिणगार सज्यो है ।
बाबै को दरबार लग्यो है ।।
छूटे इतर की फुहारी, छवि पे...... ।।३।।

श्याम मण्डल शृंगार सजावे ।
आज मगन मन काँई चाहे ।।
चरणों री धूल तिहारी, छवि पे...... ।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

लीले पे सवार होके आया, लीले पे सवार होके आया,
भक्तों का दुःख हरने देखो, खाटू वाला आया है लीले पे।।टेर।।

मेरे सिर पर हाथ तूँ धर दे, मेरी खाली झोली भर दे,
मै गुण तेरा गाऊंगा मेरे बाबा, लीले पे ।।१।।

तेरा नाम है श्योत घणेरा, माया ने मुझको घेरा,
मुझे अपना लेना मेरे बाबा, लीले पे ।।२।।

तेरी माया सबसे न्यारी, तुझे जाने दुनिया सारी,
दरश दिखा देना मेरे बाबा, लीले पे ।।३।।

तुझे किसने आज सजाया, तुझे देख मेरा मन भाया,
मगन हो नाचूँ मैं मेरे बाबा, लीले पे ।।४।।

श्याम मण्डल तुझे रिझावे, चरणों में शीश झुकावे,
खाटू में बुला लेना मेरे बाबा, लीले पे ।।५।।

●

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुझे भूलना जो चाहा......)

कितना अजीब मोहन, किस्मत का लेख मेरा,
जो कुछ भी हो रहा है, उसमें है हाथ तेरा, कितना।।टेर।।

हारे हैं हारते है, क्या हारते रहेंगे,
खामोश है कन्हैया, कुछ भी ना हम कहेंगे,
किससे कहें हे मोहन, काई ना जग में मेरा, कितना।।१।।

हिचकोले खाते-खाते, सहना भी तुमसे सीखा,
अब तो लगे हैं हारना, जुआ भी जिन्दगी का,
सुख में भी दुख है मोहन, कैसा ये खेल तेरा, कितना।।२।।

कर ली जो तुमसे यारी, जीना सफल हुआ है,
बदनाम नाम न हो तेरा, मेरी तो ये दुआ है,
कितने चलावो जादू, *ओम* छोड़े ना साथ तेरा, कितना।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा - मुरलीधर घनश्याम की, बांकी नैन कटार।
बस गयो म्हारे कालजे, सांवरियो दिलहार।।

स्थाई

आज कन्हय्यो खादू वालो बनड़ो सो लागे,
बनड़ो सो लागे कन्हय्यो, राजकुंवर लागे।।टेर।।

अन्तरा

चमकणियो बागो है प्यारो,
कैसो सज्यो है श्याम हमारो,
गल बीच नौलख हार हजारो,
माथे सोहे सेहरो दुपट्टो, केशरियो साजै.....आज।।१।।

कारे-कारे प्यारे नैन कटारे,
धीरे-धीरे मुलके श्याम हमारे,
चाँद सूरज, शरमाये तारे,
बांकी छवि न देख मोरियो, नाच रह्यो आगे......आज।।२।।

मोहन मुरली बजावे प्यारी,
कली-कली हो गई है मतवारी,
झूमन लागी डारी-डारी,
देख्यो ना दुनिया मं *ओम* कोई,सोई किस्मत जागे..आज।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दिन दिवाना है आपका दिलदार सांवरे..)

आराधना करता हूँ इस, दरबार के लिए,
मैंने रंगा केसरी चोला, लखदातार के लिए।।टेर।।

हे कलयुग के अवतारी, तेरे नाम की महिमा भारी,
मेरे दर पे आन पड़ा हूँ, दर्शन का बन के भिखारी।
घुट-घुट कर तरस रहा हूँ-२ दीदार के लिए।।१।।

स्वारथ ने मुझको घेरा, लालच ने डाला डेरा,
प्रभु मोह माया में पड़ कर, मैं भूल गया दर तेरा,
मुझे अब तो राह दिखा दे-२, भव पार के लिए।।२।।

ओ बाबा शीश के दानी, तेरी शक्ति सबने जानी,
प्यासी आँखों में भर दे, सूरत तेरी मस्तानी,
मेरा आवागमन मिटा दे-२ हर बार के लिए।।३।।

वो जीवन भी क्या जीवन, जिसने दरबार न देखा,
वो स्वामी भक्त नहीं है, जिसने माथा नहीं टेका,
खाटू में मुझे बसा ले-२, तेरे प्यार के लिए।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : एक तेरा साथ.....)

कीर्तन की है रात बाबा, बाज थानें आणो है,
थाने कोल निभाणो है।।टेर।।

दरबार सांवरिया, ऐसो सज्यो प्यारो, दयालू आपको,
सेवा में सांवरिया सगला खड्या डीकै,हुकुम बस आपको,
सेवा मं थारी-२, म्हानै आज बिछ जाणो है, थाने।।१।।

कीर्तन की है त्यारी, कीर्तन करां जमकर, प्रभू क्यूं देर करो,
वादो थारो दाता, कीर्तन में आणें को, धणी क्यूं देर करो,
भजनां सूं थाने-२, म्हाने आज रिझाणो है, थाने।।२।।

जो कुछ बण्यो म्हांसू, अर्पण प्रभु सारो,प्रभु स्वीकार करो,
नादान सूँ गलती, होती ही आई है, प्रभु मत ध्यान धरो,
नन्दू सांवरिया-२, थारो दास पुराणो है, थाने।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : प्यार दिवाना होता है.....)

सांवलिया सरकार तुम्हारी, लीला न्यारी है,
भूल न जाना बहुत पुरानी, तुम से यारी है।।टेर।।

नया-नया दास तूँ तो, बणावै सदा,
सितम गुजारे तेरी, बांकी अदा,
जाहिर तीनों लोकां मं, तेरी दातारी है।।१।।

तुम्हें छोड़ कर श्याम, जाऊँ कहाँ,
लगी अपने दिल की, बुझाऊँ कहाँ,
बन्दा तो मुद्दत से ये, नौकर सरकारी है।।२।।

मिलाया है दिल तो ये, तोड़ना नहीं,
आदत दया की श्याम , छोड़ना नहीं,
इन आख्याँ न सांवरिया, तु ही सिणगारी।।३।।

श्याम बहादुर मेरे, जीव की लड़ी,
कुण सी घड़ी मं *शिव* आंख्या लड़ी,
मेरे जिगर को टुकड़ो तो यो श्याम बिहारी है।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दे दो थोड़ा प्यार बाबा, तेरा क्या घट जायेगा,
ये बालक भी तर जायेगा।
छोड़ तेरा द्वार बाबा, और कहाँ ये जायेगा,
ये बालक भी तर जायेगा।।टेर।।
दे दिया तुमने सबको सहारा श्याम, जो द्वारे आया है।
भर दिया दामन सबका खुशीं से श्याम, जो अर्जी लाया है।
मुझको देने से, खजाना कम नहीं हो जायेगा, ये बालक।।१।।
है पुराना श्याम, रिश्ता हमारा जो, उसे तुम याद करो।
एहसान कर दो श्याम बालक तुम्हारा हूँ, अब सिर पर हाथ धरो।
प्यार का रिश्ता, हमारा टूटने न पायेगा, ये बालक।।२।।
किश्ती हमारी श्याम, तेरे हवाले है, इसे तुम पार करो।
गर दे दिया मुझको तूने किनारा श्याम, तो ये विश्वास करो।
ये तेरा दरबार, जय-जय कारों से गुंजायेगा, ये बालक।।३।।
ये जिन्दगानी श्याम, लिखदी है अब हमने तुम्हारे नाम पे।
हम बेसहारा हैं, भटके कहाँ-कहाँ तू आके थाम ले।
श्याम तेरा अहसान, सेवक भूलने ना पायेगा, ये बालक।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे.......)

तेरे नाम का पुजारी आया, तेरे दर का भिखारी आया,
श्याम दे दो दरशन, काटो सारे मेरे गम, तेरे नाम का।।टेर।।
बिन देखे तुझे नींद आती नहीं, श्याम नहीं।
धोक खाये बिन याद जाती नहीं, श्याम नहीं।
हाठों पे है तेरा नाम, रटूँ सुबह और शाम।
मेरे सिर पे हाथ फिराजा, श्याम दे दो दरशन।।१।।

दर छोड़ तेरा मैं जाऊँ कहाँ, मैं कहाँ।
दुःख दर्द मेरा मैं सुनाऊँ कहाँ, मैं कहाँ।
मेरा तूँ ही तो आधार, तेरी महिमा अपार।
होके लीले पे सवार बाबा आजा, श्याम दे दो दरशन।।२।।

तेरे चरणों से कैसे लिपट जाऊं श्याम, मेरे श्याम।
तुम कहाँ हो छिपे, किस दर जाऊं श्याम, मेरे श्याम।
क्यों हो गये खफा, मुझे इतना बता।
मेरे नयनों में आके समाजा, श्याम दे दो दरशन।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

जी लेंगे सरकार, तेरी सरकारी में,
हमें रख लेना श्री श्याम, तेरी दरबारी में।।टेर।।

तेरा रूतबा, तेरा नजारा, दो जहाँ से न्यारा है,
दिलबर मेरे, तुमसा ना कोई, लगता मुझको प्यारा है,
मिल गया मुझको, मजा तेरी यारी में.....।।१।।

जो भी कर दे, हुक्म बाबा, काम वैसा ही करूँ,
तेरे लिए गर, मरना पड़े तो, तेरे चरणों में मरूँ,
क्या रक्खा है जग, की रिश्तेदारी में.....।।२।।

तेरी किरपा, हो जाये गर, जग में तेरा नाम करूँ,
देना इतनी, शक्ति बाबा, आफतों से ना डरूँ,
श्याम श्याम *ओम* कर दे, दुनिया सारी में......।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

भगतां रै डेरै आज्यो जी सांवरिया।
दोड्या दोड्या आज्यो म्हानै भूल मत जाज्यो
म्हाने हँस-हँस कंठ लगाज्यो जी सांवरिया।।टेर।।

स्वारथ का म्हें बण्या पूतला,
म्हरी करणी पर मत जाज्योजी. साँवरिया.... ।।१।।
नेम धरम जाणां कोन्या छा,
थे ही आय सिखाज्यो जी, साँवरिया..... ।।२।।
कठिन परीक्षा निभसी कोनी,
सीधो पंथ बताज्योजी, साँवरिया ।।३।।
चोखा चोखा भगत घणां है,
थे बांमें मत रम जाज्योजी, साँवरिया...... ।।४।।
म्हें दर्शन तांई तरसां छा,
म्हारी आंख्या मां रम जाज्योजी, साँवरिया........ ।।५।।
विश्वम्भर थारो लियो रै आसरो,
नैय्यापार लगाज्योजी, साँवरिया....... ।।६।।
भगत जणां की विनती सुणियो,
आशा पूरण करियो जी, साँवरियाँ....... ।।७।।
श्याम मण्डल थानै नित की ध्यावे,
बानै दरश दिखाज्यो जी, साँवरिया....... ।।८।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मौसम है आशिकाना....)

पागल बना दिया है, मुरली ने तेरी मोहन, ये मन चुरा लिया है।।टेर।।
ठाढ़े कदम के नीचे बंशी बजा रहे हो,
वृषभान दुलारी को, जैसे बुला रहे हो,
मन क्यूँ न हो दिवाना, इक घूँट जो पिया है-२ ।।१।।

प्राणों में प्यास भरकर, कितना सता रहे हो,
मीठा सा दर्द देकर, खिसके क्यूँ जा रहे हो,
तन की सुधि भुलाई, जाने क्या पा लिया है-२ ।।२।।

बाँकी छटा जो देखी, हैरान हो गया हूँ,
अनमोल रतन पाकर, धनवान हो गया हूँ,
गोपाल का नजारा, मन में बना लिया है-२ ।।३।।

लगता है जैसे तुमसे, रिश्ता है कुछ पुराना,
शिव श्याम बहादुर को, हरगिज नहीं भुलाना,
खामोश सुन रहा है, कैसा तेरा हिया है-२ ।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे दूर से पुकार के..........)

इक बर आजा रे तुझको निहार ल्यूं
मनड़ै में दाता तेरी मूरत उतार ल्यूं।।टेर।।

अणजाण रस्तो ओर छायो अंधियारो,
तेरे बिना दाता मेरो कुण है सहारो,
ज्योति को उजालो दे दे, राह निहार ल्यूं....मनड़ै....।।१।।

बतियां बणावै देखो दुनिया दिवानी,
कालजै री पीड़ा मेरी कोई ना जाणी,
मन को गुबार दाता, कह्वे तो उतार ल्यूं.....मनड़ै.....।।२।।

आज बता दे काँई दोष है मेरो
सामनै खड्यो है दाता अपराधी तेरो,
चरणाँ नै आगै करदे, आंसू से पखार ल्यूं.....मनड़ै....।।३।।

मगन तिहारो दाता कांई तो विचारो,
निर्मोही दाता म्हारी ओर निहारो
चरणाँ की धूल थारी पलकां बुहार ल्यूं.....मनड़ै......।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : छोड़ गए बालम.......)

हार गया बाबा, तेरे प्यार में सब कुछ हार गया।
वार दिया बाबा, मैंने तन मन तुझपे वार दिया।।टेर।।

दूर से तु इतराए छलिये, क्यो ऐसे मुस्काए।
देख के तुझको अखियां मेरी, झर-झर नीर बहाए-२, हार-।।१।।

दिल को लगाया तुमसे मोहन, तूं जाने मैं जानूँ।
तोड़ के सारे माया बन्धन, तुझको अपना मानूँ-२, हार-।।२।।

हर पल तेरा ध्यान लगाऊँ, तुझसे करूँ अरदास।
हर्ष को लेले अपने शरण में, करदे पूरी आस-२, हार-।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

शरण में आये है हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन।।टेर।।

न हम में बल है, न हम में शक्ति, न हम में साधन, न हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के हम हैं भिखारी, दया करो.......................।।१।।

जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक,जो तुम पिता हो, तो हम है बालक।
जो तुम हो ठाकुर, तो हम है पुजारी, दया करो हे.............।।२।।

प्रदान करदो, महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहावोगे ताप हारी, दया करो हे.-----.................।।३।।

न होगी जब तक दया की दृष्टि, न होगी जब तक, कृपा की दृष्टि।
न तुम भी हो तब तक न्याय कारी, दया करो हे...........।।४।।

हमें तो बस टेक है तुम्हारी, पुकार यह है - प्रभु हमारी।
तुम्हारी तुम जानो, निर्विकारी, दया करो हे..--.............।।५।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : माँगने की आदत जाती नही...)

जब जब चाहा, मैनें जितना, तब तब पाया तुमसे उतना।
प्रेमियो का दिल तूं दुःखाता नहीं, तेरे जैसा और कोई दाता नहीं।।टेर।।

तुमसे चलती मेरी नैया, तेरा दिया मैं खाता हूँ।
औरो की क्या बतलाऊँ मैं, खुब की बात बताता हूँ।
प्रमियों की भूखा तूं, सुलाता नहीं, तेरे जैसा और कोई दाता नहीं ।।१।।

दिल मे मेरे टीस उठे तो, मनवा तेरा रोता है।
मुझको जो कांटा लग जाये, दर्द तुम्हारे होता है।
प्रेमियों को श्याम तूं, रूलाता नहीं, तेरे जैसा और कोई दाता नहीं।।२।।

जब तू मेरे साथ है बाबा, दुनिया से फिर डरना क्या।
हर्ष कहे सब तू करता है, और मुझे अब करना क्या।
माँगने कहीं पे भी मैं जाता नहीं, तेरे जैसा और कोई दाता नहीं- ।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : स्वरचित)

तमन्ना फिर मचल जाये, अगर तुम मिलने आ जावो।
मेरी जिन्दगी संवर जाये, अगर तुम मिलने आ जावो।।टेर।।

क्यूं आशाओं की उलझन में, रहा उलझा मेरा जीवन, रहा-२
मेरी उलझन संवर जाये, अगर तुम मिलने आ जावो, तमन्ना...।।१।।

छलकते आंख के आंसू कहीं बेकार ना जाए, कहीं-२
चरण छू कर बने मोती, अगर तुम मिलने आ जावो, तम्मन्ना ।।२।।

नहीं मिलते हो तुम मुझसे, तो मोह, दुनिया से होता है, तो-२
हटे *साहिल* ये मोह बन्धन, अगर तुम मिलने आ जावो, तमन्ना....।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : हद करदी आपने....)

लाखो लाखो भगत हुए है, आपके मालामाल।
सुधर गई हालत उनकी, जो रहते बेहाल।
मुझ गरीब की अब तक बाबा-२
आया क्यूँ न थामने, हद करदी आपने-।।टेर।।
बड़ी पुरानी आप की, और मेरी पहचान है।
और मेरी तकलीफ से, आप नहीं अंजान है।
औरो को तो बहुत दिया है-२, छोटी सी पहचान है, हद -।।१।।
ऐसे बाबा आपसे, ज्यादा ना निभ पायेगी।
ना जाने कब बुझ जायेगी मेरी बारी आयेगी।
डंके की मैं चोट पे कहता-२ बाबा तेरे सामने, हद-।।२।।
थोड़ा बाबा सोचिए, मेरे इन हालत पर।
गौर जरा सा कीजिए, दास कमल की बात पर।
गर जो भर के मुझे मिले तो-२, एलान करूंगा सामने, हद-।।२।।

●

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अनोखी थारी झाँकी)

झुक गये बड़े-बड़े सरदार, तेरी मोर छड़ी के आगे।
तेरी मोर छड़ी के आगे-तेरी मोर छड़ी के आगे-झुक गए-।।टेर।।
राजा को रंक बनादे, निरधन का सेठ बनादे-२
झुक गये- बड़े-बड़े साहूकार, तेरी..............।।१।।
चाहे कोई हाथ लगाये, चाहे कोई घात लगाये-२
कट गई- बड़ी-बड़ी तलवार, तेरी...............।।२।।
बाला ये अरजी लगाये, तेरे चरणो शीश नवाये-२
झुक गई- कलयुग में सरकार, तेरी............।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : बिन सजनी के साजन....)

जब कोई नहीं आता, मेरे श्याम आते हैं.
मेरे दुख के दिनों में वो, बड़े काम आते हैं।।टेर।।

मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती,
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती।
मैं डरता नहीं रस्ते, सुनसान आते हैं।।१।।
कोई याद करे इनको, दुख हल्का हो जाये,
कोई प्रेम करे इनको, ये उसका हो जाये।
ये बिन बोले दुख को, पहचान जाते हैं।।२।।
ये इतने बड़े होकर, दीनों से प्यार करें,
बनवारी छोटे बड़े, सब को स्वीकार करें।
हर भगतों का कहना, ये मान जाते हैं।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : जो तुमको हो पसन्द...)

करनी पे मेरी सांवरे, मत ध्यान दीजिए।
हे देव कर कृपा मेरा, उद्धार कीजिए।।टेर।।

जागे हैं भाग्य मेरे, तेरे दर जो आ गया मैं,
तुम देव हो दयालू ये मान भी गया मैं,
शर्मिन्दा हँ सजा मुझे-३, जो चाहे दीजिए।।१।।
जैसा भी हूँ तुम्हारे, प्रभु सामने खड़ा हूँ,
जीवन का मोल भूलकर, माया में मैं फँसा हूँ,
दुर्बल हूँ, हाथ थामकर-३, मुझे पार कीजिए।।२।।
पतितों को करते पार तुम, कहता जहाँ ये सारा
मिलकर रहेगा, एक दिन, मेरी नाव को किनारा
नन्दू भरोसा आपका-३, मत देर कीजिए।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में.......)

सूरत सलोनी श्याम की, दिल में उतार लो।
अवसर मिला नसीब से जीवन संवार लो.....।।टेर।।

माना तुम्हारी नाव, किनारे पे है खडी।
तुफान का भरोसा क्या, आ जाये किस घड़ी।
कैसे करेगा सामना-२ कुछ तो विचार लो ।।१।।

जिसके भी दिल में श्याम की, सूरत उतर गई।
उसको तो छोड़ सांवरा, जाता कहीं नहीं।
रहता है आस-पास ही-२, जब भी पुकार लो ।।२।।

नजरों से अपनी श्याम की, आंखो में झांक लो।
चुपचाप बैठ सामने, पलकों से काम लो।
बरसेगा प्रेम श्याम के-२, नयनों से जान लो।।३।।

बनकर दीवाना श्याम के, दामन को थाम लो।
भरदेगा खुशियां सांवरा, जीवन में जान लो।
नन्दू निराले देव को-२, फिर से निहार लो।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : झिल-मिल सितारो का......)

कलियुग में कान्हा गर ना होता, तेरा ये जीवन कैसा होता।
तूं अपने दुखड़े को आखिर कब तक ढोता।।टेर।।

माया के चक्कर में दुःख से परेशान कभी ना हो,
मोहन साथ रहेगा तेरे आके तो एक बार कहो।
जपले कन्हैय्या को जीवन छोटा.........तेरा ये.......।।१।।

गम की सूनी राहो में संसार न साथ निभाएगा,
हाथ पकड़ के तेरा ये तुझको हर राह दिखाएगा।
हीरे सा जीवन क्यूँ है खोता......तेरा ये.......॥२॥

तेरी ही महिमा की कान्हा गाथा तब तक गाएगें,
जब तक प्राण *प्रकाश* रहेगा सुमिरण करते जाएगे।
माया के जग में क्यूं है रोता......तेरा ये......॥३॥

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मिलेंगे तुमसे तो बताएगें...)

सूनो कन्हैय्या हम पुकारे है, आके द्वार पे तेरे-२
ओ सांवरा-ओ सांवरा, ओ सांवरा, ओ सांवरा॥टेर॥

द्वार तुम्हारे है, कब से पुकारे है।
आओ कन्हैया तुम, अब हम हारे है॥
अब मैं जाना हूँ; जग बेगाना है।
तोड़ के सब बन्धन, तुमको ही पाना है॥
ओ सांवरा.....४..... सुनो कन्हैय्या --॥१॥

आशा निराशा तो, मन की कहानी है।
बहुत मिली ठोकर, अब नहीं खानी है॥
मैने सुना मोहन, तुम सबके सहारे हो।
शरन पड़ा जो भी, उसको तारे हो॥
ओ सांवरा .....४..... सुनो कन्हैय्या-॥२॥

तेरा दिवाना तो, सारा जमाना है।
तेरी ही महिमा, बस हमें गाना है॥
अपने चरणो की, कुछ भक्ति देना।
मन *प्रकाश* कहता, मैं अपना लेना॥
ओ सांवरा.....४....सुनो कन्हैय्या ॥३॥

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मुझे तेरे प्यार की जुदाई मार डालेगी....)

सजमत श्याम नजर लग ज्यावैगी।
कामणगारी गूजरी, जुलम कर ज्यावैगी।।टेर।।

दीखै कोनी मने तेरी प्यारी सी सुरतीया।
सज धज नाचै आके साथ सारी रतियाँ।
आँखियां सै सखियाँ, कहर बरसावैगी सजमत.....।।१।।

तू के जाणै गोपियाँ के मन मतवाले ने।
ठगणी है ठग लेंगी श्याम भोले भालै ने।
मीठी मीठी बातां कर कर कै फंसावैगी, सजम्त....।।२।।

आंख्या को काजलियो तेरे होठां की या लाली।
चोर लागी चोरटी उचक्की नखराली।
बड़ी हे चतुर तेरे बल में न आवैगी, सजमत......।।३।।

भूल ज्यागो आंके आगै सारी हूँसियारी तू।
ये है तेराताली श्याम भोलो है *बिहारी* तू।
नैणां में छुपाय तनै, ले कै घर जावैगी, सजमत......।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : हम जब सिमट के आपकी बाँहों में....(वक्त)

इस युग में महिमा श्याम की सबसे महान है।
निर्बल को बल गरीब को देते वो दान हैं।।टेर।।

नहीं भेंट कोई चाहिये नहि पूजा अर्चना,
पलभर नहीं ठहरते, जहाँ होती प्रीत ना,
दो आँसु अपने भक्त के बाबा के प्राण है।।१।।

विश्वास जिसने कर लिया दर पर अटल रहा।
दुःख लाख सहके मुख से, श्री श्याम ही कहा।
निश्चित बनी है अन्त में उसकी ही शान है।।२।।

कोई परख के देख ले किसी भक्त की ये बात।
नहीं छू सकेगा उसको कभी मद, क्रोध और काम।
विक्रम परीक्षा लेणी तो बाबा का बाण है।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ श्याम खाटू वाले....)

जिस नाम से सुमिरि लो, मन में करे उजाला,
मेरा मन करे उजाला
चाहे हो मुरली वाला, या श्याम खाटू वाला ।।टेर।।

अन्तरा

एक तीन वाण धारी, एक मुरलिया बजाये,
एक बाल ब्रह्मचारी, एक रास है रचाए,
भक्तों के दिल की धड़कन, आँखों का उजाला, चाहे...।।१।।

माखन का एक चुरैय्या, एक शीश का है दानी,
एक नीति का नियन्ता, एक वीर स्वाभिमानी,
तेरा मन कहे सो बोलो, कान्हा या खाटू वाला....।।२।।

दोनों है दीन बन्धु, भक्तों का पद बढ़ाए,
कोई प्रेम डोर बाँधे, बँध कर वो चले आए,
दोनों ने मन *मगन* को, हर कष्ट में सम्भाला, चाहे...।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : लल्ला लल्ला लोरी.....)

आयो फागण मेलो, बाबो मारे हेलो,
खाटू धाम चालो, भगतां न संग ले ल्यो ।।टेर।।

फागणियो रंगीलो महिनो, भोत लागे प्यारो,
मंदरिया में होली खेलां, सागे खाटू वारो,
केशर रंग पिचकारी, लाल गुलाल उड़ैलो, खाटू धाम।।१।।

जमघट मांचे आंगणिये में, नाचां कूदां जोर से,
टोलियां की टोली आवे, जै जै बोले शोर से,
ढोलक ढप और झांझ बाजे, साथ में नगाड़ो, खाटू धाम।।२।।

लागे है दरबार ऐसो, बाबे की सरकारी में,
फरियादी है रकम-रकम का, यांकि ताबेदारी में,
होवै है सुणवाई, थे भी अर्जी गेरो, खाटू धाम।।३।।

शरणागत का संकट, बाबै से ना देख्या जावे,
दुखिया का संताप बाबो पल में मिटावे,
ऐसो है दयालू मोहन मुरली वालो, खाटू धाम।।४।।

के सोचे है बावला, करले खाटू की त्यारी,
श्यामधणी का दर्शन करस्यां दुविधा मिटज्या सारी,
भोतहि बेगो रीझे, मोहन मुरली वारो खाटू धाम।।५।।

ओड बड़ै संसार माई, थारो एक आधार है,
बाबा म्हारो ध्यान राखियो, टाबर की पुकार है,
श्याम मण्डल फरमावें सबने गले लगाल्यो, खाटू धाम।।६।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

कहणो मान ले साँवरिया, इतनों मतना रूसे रे कहणो।।टेर।।
तेरे रे रूस्याँ स सारी दुनिया बोली मारे रे,
हाँसी मतां करावे, इतणो मतना रूसे रे।।१।।
तेरे रे रुस्यां से मेरा आँसुड़ा गम खावे ना,
आज मता रूलावे, इतणो मतना रूसे रे।।२।।
तेरे रे रूस्याँ स मेरी नींदडली खो जावे रे,
क्यूँ ना खोज लगावे, इतणों मत ना रूसे रे।।३।।
तेरे रे रूस्याँ से मेरी बात बिगड़ती डोले रे,
क्यूँ ना बात बणावे इतनो मतना रूसो रे।।४।।
तेरे रे रूस्याँ से तेरो इन्दू भोत घबड़ावे रे,
क्यूँ ना धीर बँधावे, इतणो मतना रूसे रे।।५।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा : राधा आई, सखिया आई, मोहन के संग ग्वाले।
वृन्दावन में सबने देखो, तन मन है रंग डाले।।

तुम झोली भर लो भगतों रंग और गुलाल से।
होली खेलागाँ आपां गिरधर गोपाल से।।टेर।।
कोरा-कोरा कलश मँगाकर उसमें रंग घुलवाना,
लाल गुलाबी नीला पीला केसर रंग मिलवाना,
बच-बच के रहना उनकी टेढ़ी-मेढ़ी चाल से, होली।।१।।
लायेंगे वो संग में अपने ग्वाल - बाल की टोली,
मैं भी रंग गुलाल मलूँगी और माथे पर रोली,
गायेंगे फाग मिलके, ढोलक खड़ताल से, होली।।२।।
श्याम पिया की बजे बाँसुरिया, ग्वालों के मंजीरे,
चंग बजावें ललिता नाचे, राधा धीरे-धीरे,
गायेंगे भजन सुहाणे हम भी सुरताल से, होली।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा - आपसे ये अरदास है, प्रभु मेरी कर जोर।
श्याम नाम धुन में रहे, मेरे मर का मोर।।

फागणियो आगो है, भगतां को सागो है,
चालो तो चालो, दरबार लाग्यो है।।टेर।।

ऐं की दया का ढोल बजावे सारी दुनियां,
भोत बड़ो दातार बतावे सारी दुनियां,
यो कितनों साँचो है, यो कितनो फोसरो है,
जाकर के बोलो बाबा म्हारो आसरो है।।१।।

जादू को पिटारों ऐं को रूप के बताऊं,
जैय्यां भी सजाले लागे प्यारो के बताऊं,
यो जग से न्यारो है नैंणा को तारो है,
ज़रा जा कर देखो यो जग उजियारो है।।२।।

दुखियारां की गाड़ी यां कै मेन लाइन चालै,
चोखौ खाता पीतां नं यो उजलो देखै भालै,
संता को कहणों है, जै ऐंसू मिलणो है,
तो अन्तर घट में, जरा दर्द घोलणो है।।३।।

चाहे जितनी कोशिश करले यो बस मं ना आवै,
प्रेम के आँटे में यो तुरता फुरती फंस ज्यावे,
यो प्रेम को भूखो है, चाहे रूखो सूखो है,
जूठे बेरां को भाया स्वाद अनूठो है।।४।।

साथीड़ा न जातां देखूं थारे से पुकारु,
अब के (सालीना) बुलाये बाबा बेसी कोनी ख्यारु,
टाबरियो तो भोलो है, पण तूं तो स्याणो है,
छोटी सी बात ने थाने के समझाणो है।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : जब चले ठण्डी हवा.....

सोचै मतना बावरा, खाटू चालण की जँचा,
आयो फागण आ गयो, बाबै को बुलावो।।टेर।।

यो रंगीलो मास है, मन में यो विश्वास है,
श्याम का दर्शन मिलै, श्याम का दर्शन मिलै,
थाम लेमन न जरा, सागै साथी मोकला, आयो फागण....।।१।।

भक्त आवै मोकला, नाचै ढप की ताल पर,
खाटू जाकर देख ले, खाटू जाकर देख ले,
हाथ बाबै की ध्वजा, पगल्यां बाँध्या घूँघरा, आयो फागण..।।२।।

साँचो यो दरबार है, साँवरो सरकार है,
झोलियाँ सबकी भरै, झोलियाँ सबकी भरै,
तूँ भी झोली ले फैला, भर ही देसी साँवरा, आयो फागण...।।३।।

रंग बरसै लो अभी, बाबा के दरबार में,
साँवरो मुस्का रह्यो, साँवरो मुस्का रह्यो,
प्रेम की ज्योति जगा, चित्त *मगन* चरणा मँल्या, आयो फागण...।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

चंग बाजण द्यो साथीड़ो आपां घूमर घाला रे, चंग...।।टेर।।

ज्यूँ-ज्यूँ चंग बाजै त्यूँ-त्यूँ चाव घणेरो जागै रै-२
बांध घुंघरा सांवरिया नै, संग नचावां रे चंग बाजण द्यो......।।१।।

कानूड़ो रसीलो म्हानें भोत ही प्यारो लागै रे-२
रंग लगावां सगला मिलकर, भजन सुणावां रै चंग बाजण द्यो.....।।२।।

फागण महिनो धणो सुहाणो, भगतां साग होल्यो रै-२
नन्दू चालो खाटू नगरी, ध्वजा चढ़ावा रै चंग बाजण द्यो.....।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा - फागणियो रंग स भरयो, हिवड़ै उठे उमंग।
जाणो है दरबार में बाजण लाग्या चंग।।

स्थाई

डोरी थामले सथीड़ा, या है श्याम की ध्वजा, डोरी-।।टेर।।

अन्तरा

रेशमी केसरिया जाको,, झीणो-झीणों धागो
चिमकणियां तारां, गोटा सं कोरणी सजा डोरी।।१।।

सतरंगी है पांख, जैके माथे ऊपर सोहै
बीच माई श्याम जी को नाम लिखा डोरी।।२।।

जोड़ै सेती आज्यो, सागै कुटुम्ब कबीलो लाज्यो
बाबा न भी लाज्यो सागै पोता न भी ल्याजो
गाता और बजाता आज्यो बाबा की रजा डोरी।।३।।

करड़ी सं करड़ी आफत, आवै तो बाबो देखै
ऐसो देव दयालू, बेगी काट दे कजा डोरी।।४।।

पेड़ा भी मिलैगा थानै, लाडू भी मिलैगा
सागै चालै गो तो मेवा मिश्री भी मिलैगा
खीर चूरमे का, चाख ले मजा डोरी।।५।।

चोखी करसी चोखी पासी, सत्संगी या बोलै
अर्जी लिखकर श्याम धणी नै बेगो सो भिजा डोरी,।।६।।

टाबरियो नादान बाबा, लिखणो कोनी जाणे
टेडी-मेडी कह दी जैंय्या मान ले आजा डोरी।।७।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : धमाल

हेलो आयो रे साथीड़ो, बाबो श्याम बुलायो रे।।टेर।।
खाटू की नगरी में बाबा, श्याम धणी की ठीडो रे।
जांसू मिलण क खातिर, यो जी ललचायो रे हेलो।।१।।
फागणिया मं भोत जोर को, मेलो इनके लागे रे।
श्याम ध्वजा ले रींगस स,थे पैदल जायो रे, हेलो।।२।।
बाजे चंग अनोखा जांकी, तान पे सेवक नाचे रे।
घूमर जांकी देख-देख, म्हारो मन हर्षायो रे, हेलो।।३।।
इनके जैसो दिलेर सेठ कोई, ई जग मं ना दीख्यो रे।
दो मीठी-मीठी बातां स, काम बनावो रे, हेला।।४।।
लगैगो दरबार श्याम को, खुलके माल लुटावगो।
श्याम मण्डल क जंचगी याही, माल कमाल्यो रे हेलो।।५।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : (धमाल)

मेहन्दी मान्ड ली सांवरिया म्हे तो थारे नाम की-मेहन्दी--
सजधज कर मैं गोपी बन गई, श्याम के गांव की मेहन्दी--।।टेर।।
जोशीड़ा ने भेज खाटुड़ां, मेहन्दी म्हें मंगवाई जी,
भाव भक्ति की सिल लोढ़ी से, मेहन्दी म्हें घुटवाई जी,
मेहन्दी-मांड खुश होकर नांचू, परवा के गाम की, मेहन्दी- ।।१।।
इ मेहन्दी री शान निराली, श्याम ने लागे प्यारी रे,
वीं हाथां या रची रे मेहन्दी, जीं की श्याम से यारी रे,
म्हे तो जनम-जनम से ग्वाला, गोपी श्याम की, मेहन्दी- ।।२।।
श्याम नाम की मेहन्दी प्यारी, जीं हांथा में रचगी रे,
समझो वीं भक्तां री भक्ति, सांवरीया नं जचगी रे,
भक्त *कुमार* को तन मन रच गयो, किरपा श्याम की, मेहन्दी-।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : राजस्थानी (चन्द्र गजरवा)

मंदिर में बड़ग्यो, होली खेलण सैं डरतो साँवरो।।टेर।।

भीतर बैठ्यो नैण चलाकै, करले तूं मनमानी।
बारै आकर देख तमाशा, याद कराद्यां नानी जी।।१।।
रास रसीलो रंग रंगीलो, जग तेरा जस गाया।
सुण कर आया रंग खेलबा, आकर कै पिसताया जी।।२।।
म्हेतो सुण राखी छैलो है, अलबेलो दिलदार।
काम पड़यो जद दौड़्यो आयो, निकल्यो असल गँवार जी।।३।।
बणकै बीनणी भीतर घुसर्‌यो, ललकारै नर नारी।
हिम्मत है तो आव बारनै, लै कै रंग पिचकारी जी।।४।।
सुण रंग रसिया ओ मन बसिया, ओ के नाम कमाया।
ताना मारै लोग शरम कर, हंस रही खड़ी लुगायाँ जी।।५।।
निर्भय होकै तेरै नाम को, ओढ्यां फिरां दुपट्टो।
ऐसो काम करण से लगज्या, सरदारी में बट्टो जी।।६।।
मै तेरो तू मेरो *बिहारी*, तू राजी मै राजी।
चलती आई सदा चलेगी, या अपनी रंगबाजी जा।।७।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

ओ सारो नगर भींग रह्यो रंग में ।।टेर।।

राम और लक्ष्मण दोनूँ होरी र खेलै।
आछो के सांवरा सीता भी रंग गई रंग में ।।१।।
शंकर पार्वती जी होरी र खेलै ।
आछो के सांवरा नन्दी भी रंग गयो रंग में।।२।।
ब्रह्मा और विष्णु दोनूं होली रै खेलै ।
आछो के सांवरा लक्ष्मी भी रंग गई रंग में ।।३।।

राधा और रूक्मण दोनूं होरी रै खेलै।
आछो के साँवरा मोहन भी रंग गयो रंग में।।४।।
कृष्ण सुदामा दोनूं होली रै खेलै।
आछो की साँवरा राधा भी रंग गई रंग में ।।५।।
खाटू नगर में सब कोई होली रै खेलै।
आछो की साँवरा आलूसिंह रंग गयो रंग में।।
श्याम मण्डल में सब कोई होली रै खेलै।
आछो के साँवरा बाबो भी रंग गयो रंग में।।६।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुझे गीतों में ढालूंगा.....(सावन को आने दो))

थाने तनमन से ध्यावाँगा, खाटू म्हे आवाँगा,
फागण कै मेले में ओऽऽऽऽ फागण के......।।टेर।।

अन्तरा

रंगीलो फागण आयो, मन में उछाव भर ल्यायो,
चालो रे साथीड़ो चाला, मनड़ो म्हारो हर्षायो,
कर में ध्वजा थारी, सिर पर कृपा थारी, नाचां और गावांगा,फागण ।।१।।

रंग बिरंगी ध्वजा ल्यावो, बाबै की रात जगावो,
ढप और ढोल बजावो, बाबै ने भजन सुणावो,
बाबो है दातारी, अर्जी सुणै थारी, अर्जी लगावोगा, फागण ।।२।।

थारी है शान निराली, द्वारे पर खड्या है सवाली,
थारो दरबार है साँचो, झोली रहे ना कोई खाली,
दरबार में थारे, झोली भरावांगा सब सुख पाजावांगा, फागण ।।२।।

मन में लगन बाबा थारी, सुणले ओ लखदातारी,
गाजै बाजै से बाबा आवां, कृपा होवे जो बाबा थारी
धुन में *मगन* थारी, खाटू की तैयारी, इबकै मेरी बारी, फागण ।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा : मांगण ताईं आयो दर पर मोटो सेठ कुहावे।
झोली भरसी सब भगतां की म्हाने क्यूँ नट जावें।।

स्थाई

चालो श्याम ध्वाजा ले हाथ,
अर्ज सुण लेगो साँवरिया- चालो.....।।टेर।।

अन्तरा

रंग बिरंगी चिमक किनारी, टाबरिया कर लीन्ही त्यागी,
पत राखै गो श्याम बिहारी,
वो ही खेवणहार जगत की नाव चलावणियो।।१।।

चाल रे मनवा मत सकुचावे, झालो देकर श्याम बुलावै,
बड़भागी या ध्वजा उठावे,
श्याम ध्वजा में श्याम बिराजे, जाणै जाणणियो ।।२।।

हलवाँ चालो सबके सागे, आगै आगै मतना भागै,
सब घर का नं ले ल्यो सागै,
नाचौ घूमर धाल नाच घुंघरू खनकावणियो।।३।।

मन्दिर मांही भीड़ घणेरी, दर्शन मं लागैगी देरी,
भूल जा बन्दे तेरी मेरी,
बैठ्यो लखदाता करम का पाना बांचणियो।।४।।

ऐसो मोको रोज न आवे, साँवरियो भंडार लुटावे
श्याम मण्डल का टाबर गावे,
चालै थारे साथ मगन जयकार लगावणियो ।।५।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : राम तेरी गंगा मैली.......)

दोहा : च्याण चुकी मन मं उठ्यो, थां दर्शन रो चाव।
आकल बाकल हो गया, ऐसो तेरो लगाव।।

स्थाई

रंग रंगीलोऽऽऽऽ देखो फागण महीनो आयो,
चाल मनड़ा बाबाजी के द्वार तूं, बाबै को बुलावो आयो।।टेर।।

अन्तरा

आँगलिया पर गिणता गिणता, जद यो फागण आवै,
याही थारी खाटू नगरी, भगतां से भर जावै,
आवो सब मिल चालो, याँकी रात जगाल्यो,
शीश चरणाँ में झुकाके, याँकी ध्वजा तो उठाल्यो,
पग-पग चालोऽऽऽऽ और जै जै कार लगावो, चाल मनड़ा।।१।।

धन्य-धन्य है खाटू नगरी, प्यारो श्याम विराजै,
मकराणै के मंदिर आगै भगत बावरा नाचै
थे भी चंग उठाल्यो, होली दो एक गाल्यो,
पग घुंघरू बँधा के, थोड़ी घूमर घालो,
बाबै न मनाल्यो देखो-देखो यो शुभ दिन आयो, चाल मनड़ा।।२।।

श्याम कुण्ड में न्हाकर देखो, कोढ़ी काया पावै,
पाँगलिया भी नाचै कूदै, गूंगा भजन सुणावै,
लखदाता हैं यो म्हारो, याँने जाणै जग सारो,
झोली सबकी भरैगो, जाके द्वारे पर पसारो,
झोलियां भराल्यो थाने *मगन* यो ही समझायो, चाल मनड़ो।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : आये हो मेरी जिन्दगी में.....)

उठ चल मनणा खाटु, मन में विचार करके,
तेरी आश वा पुरगो-२ साचे धणीं सुं कहदे, उठ चल....।।टेर।।

सब मन की उलझनां नं, दरबार में सुणावां,
आंसू का घुट भर कर, दुनिया न के दिखावां,
दुनिया कसेगी हंसकर, ताना हजार सुन ले, तेरी....।।१।।
मन मीत यो बनेगो, सांची लगन लगाले,
प्रेमी को मीत सच्चो, इतिहास सूं गवाले,
श्री कृष्ण सूं सुदामा पकड़ा था बाथ भरके, तेरी....।।२।।
खुद गर्ज ही सही म्हे कुछ अर्ज कर रहा हाँ,
करमां न देखकर म्हे कहणैं सुं डर रहा हाँ,
एक पल ना दूर करियो, जब तक है प्राण तन में, तेरी ....।।३।।
दर-दर की ठोकरां सूं दरबार तक मैं आयो,
साचां धणी थे म्हाने इब और ना रूलायो,
कानु शरण म थारे इब पकड़ो हाथ बढ़के तेरी आश....।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : धमाल)

फर फर फहरावे निशान ध्वजाबंदधारी का
ध्वजाबंदधारी का, म्हारे लखदातारी का, फर,....।।टेर।।

चम-चम चमके गोटा तारा, किस्मत थारी चमकै गी,
चिमकणियो निशान ले कर खाटू नगरी जा, फरफर...।।१।।
पचरंगो निशान थारै जीवन मांही रंग भरै,
श्याम धणी की भक्ति सै कोई रंग चटकीलो ना, फरफर...।।२।।

छोटे छोटे हाथां मांही श्याम ध्वजा छोटी छोटी,
छोटे मन की छोटी बाताँ श्याम सुणे पहल्या, फरफर...।।३।।

के छोटो, के बड़ो, और के चिमकणियो के पचरंगो,
श्याम ध्वजा में श्याम विराजे, कष्ट हरै सबका, फरफर...।।४।।

बाबै को निशान कोई बड़भागी ही ले जावै,
मगन मस्त हो नाचै गावै पावे श्याम कृपा, फरफर...।।५।।

•

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : स्वरचित)

आज म्हारे सुपने में, श्याम धणी आया,
मुलक मुलक, संदेशो सुनाया,
चालो चालो चालो खाटु धाम, फागणियो आयो।।टेर।।

फागण रंगीलो यांकी मस्तानी चाल है,
मोरिया पपइया देखो, गा रह्या धमाल है,
मंदरी पवन कांई गुण गुण गावे,
कानां में पड़ै तो रस, घुल-घुल जावे, चालो.....।।१।।

मुख में हो श्याम नाम ध्वजा हाथ में,
कॉई तो फिकर, तनै बाबो तेरे साथ में,
मोर छड़ी फर-फर फहरावै,
घुघरू पधाँ का कॉई बोल सुणावे, चालो.....।।२।।

चटकीली लाल पीली उड़ै या गुलाल है,
बाबै संग होली खेलां *मगन* खयाल है,
मनड़ै ने श्याम जी के रंग में डुबावाँ
भजनां को रंग घर-घर बिखरावा, चालो....।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : पुरवा सुहानी आई रे.....)

श्याम के धाम तूँ जाना भाई जाना,
तन पे गुलाल लगाना लगाना।
होली ऋतु आई रे आई होली,
झूमे नाचे सारा गाँव बीच में नाचे श्री श्याम।
खाटू में मस्ती छाई रे आई होली...... ।।टेर।।

अन्तरा

फागुन का मौसम है बड़ा मस्ताना,
खेली चाहो होली तो खाटू में जाना।
वहाँ होली श्याम खेले लगे है रंगों के मेले,
हवा में गुलाल छाई रे, आई होली.....।।१।।

मंदिर के आगे भगत घणे नाचे,
ताल मृदंग और ढप वहाँ बाजे।
झूमे सारे मस्ती में, मची धूम बस्ती में,
हर तरफ जवानी छाई रे, आई होली....।।२।।

मंदिर से देखो श्याम भक्तों में आये,
मिट्ठी गुलाल की वो माथे से लगाये।
भक्तों के साथ झूमें, पूरे खाटू में घूमें,
देखें मर्द और लुगाई रे, आई होली....।।३।।

खाटू में *मनहर* खड़ा सबके आगे,
झूम-झूम वो तो *मुरारी* संग नाचे।
ये दोनों दीवाने हुए श्याम जी के रंग में हुए,
इन पर दीवानी छाई रे, आई होली.....।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दिल दिवाना ना जाने कब खो गया....)

स्थाई

छम छम घुंघरू बाजे ढप पर ताल दे,
फागणियो चढ़ आयो खाटू चाल रे,
तँ चाल रे, तूँ चाल रे, तूँ चाल रे खाटू धाम, छम छम....।।टेर।।

अन्तरा

रंग रंगीलो सांवरो, रंग रंगीलो फाग है,
बाबै का दरशन करां भोत बड़ेरो भाग है,
जा खाटू धाम, जा खाटू धाम
तूँ चाल रे-३ खाटू धाम, छम छम.......।।१।।

हलवां हलवां चालज्यो, श्याम-ध्वजा ले हाथ में,
छम छम छम छम नाचज्यो, सब भक्तां के साथ में,
जा खाटू धाम, जा खाटू धाम
तूँ चाल रे-३ खाटू धाम, छम छम.......।।२।।

जमघट मांचे आंगणे, धूमर घालां जोर से,
धरती अम्बर गूंज जा, जैकारा के शोर से,
जा खाटू धाम, जा खाटू धाम
तूँ चाल रे-३ खाटू धाम, छम छम.......।।३।।

श्याम मण्डल परिवार तो खाटू नगरी जा रह्यो,
सांवरियो देखो *मगन* झालो दे बुला रह्यो,
जा खाटू धाम, जा खाटू धाम
तूँ चाल रे-३ खाटू धाम, छम छम.......।।४।।

●

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दूल्हे का सेहरा.....)

राधा का मोहन दिवाना लगता है, प्रेम का बन्धन सुहाना लगता है,
प्रेम का कैसा अनोखा ये रिश्ता, इनका तो हर दिल दिवाना लगता है ।।टेर।।

श्याम की वंशी बजे, राधा चली आए,
राधा की पायल बजे तो श्याम आ जाये,
आपस का रिश्ता निभाना लगता है, प्रेम का..।।१।।
श्याम की वंशी बिना पायल बजे जितनी,
राधा की पायल बिना वंशी बजे जितनी,
फीका दोनों का बजाना लगता है, प्रेम का....।।२।।
प्रेम की सच्ची सुलभ तस्वीर है इनकी,
एक दूजे से बँधी तकदीर है इनकी,
इनका दीवाना जमाना लगता है, प्रेम का.....।।३।।
तुमने भजन गाया औ, राधेश्याम ना गाया,
मैली की मैली रही, कंचन सी ये काया,
संजू के चरणो में दिवाना लगता है, प्रेम का..।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : बनकर मांझी)

दुनियां का बनकर देख लिया, अब प्रभु का बनकर देखेंगे,
हम बिना मोल के सेवक हैं, चरणों में गुजारा कर लेंगे।।टेर।।
हम जैसे प्रेम दीवानों की, सुनवाई कभी तो होती है,
जब तक न प्रभु का भनक मिले, हर दर्द खुशी से सह लेंगे, हम..।।१।।
इस दर्द में जो आनन्द छुपा, बेदर्दी इसे क्या पहचानें,
मीरा नरसी प्रह्लाद भक्त, रैदास सूर शिक्षा देंगे, हम..।।२।।
नन्दू माया के फन्दों का, प्रभु चरणों में कोई जोर नहीं,
बिछ जाना है हरि चरणों में, भवसागर पार उतर लेंगे, हम..।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

श्याम बाबा के दर्शन करे जायेगें,
मरते-मरते भी यह नाम जपे जायेंगे।।टेर।।
आपके दर्शन को आये बड़ी दूर से,
करके दर्शन तुम्हारा चले जायेंगे।।१।।
आपके दर्शन अगर मुझको हो जायेंगे,
तो सीधे ही बैकुण्ठ चले जायेंगे।।२।।
मेरे मन की लगन को भी सुनना प्रभो,
पूरी करना सभी हम चले जायेंगे।।३।।
मनहर शर्मा शरण तेरी आन पड़ा,
साल भर में भी दरशन को फिर आयेंगे।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : यारी हो गई यार से.....)

साँवरिये सरकार हम तुम्हारे है,
साँवरा-साँवरा दिल पुकारे है।।टेर।।

तेरे जैसा साथी, दुनियाँ में नहीं है,
तेरे सखा सुदामा, की बात सही है,
कब से हम, हैं खड़े तेरे द्वारे है।।१।।
मिलता रहेगा मोहन, तेरी यारी का मजा,
होता वही है कान्हा, जिसमें है तेरी रजा,
जिसने दिल दिया, उनको तारे है।।२।।
प्रेम अमर हो ऐसा, इतिहास बन जाए,
दिलवर महर करो तो,मेरी बात बन जाये,
ओम यारी पे आज, नजर उतारे है।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : चुरा ले न तुमको ये मौसम सुहाना....

कन्हैय्या गरीबों की कुटिया में आना
भजन हम करें तुम बंशी बजाना।।टेर।।

तेरी राह में हमनें, पलकें बिछायी
इन आँखों के रस्ते दिल में समाना
इन आँखो के रस्ते दिल में समाना ।।१।।
हम दीन तुम, दीनबन्धु कहाते
हमारा तुम्हारा है रिश्ता पुराना
हमारा तुम्हारा है रिश्ता पुराना ।।२।।
नहीं पास मेरे है, मेरा कुछ भी अपना,
तुम्हारा दिया तुझको चाहूँ चढ़ाना
तुम्हारा दिया तुझको चाहूँ चढ़ाना।।३।।
बहुत बेसुरा हो गया है जमाना,
हमें फिर सुरीली सरगम सिखाना
हमें फिर सुरीली सरगम सिखाना ।।४।।
कन्हैय्या यही साध है जिन्दगी की,
मगन मन बने बस तेरा दिवाना,
मगन मन बने बस तेरा दिवाना।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : माई नी माई...)

मैय्या री एक खिलौना, छोटा सा दिलवादे,
चाबी भर कर छोडूँ तो, वो एक ही रटन लगादे,
बोले श्याम-श्याम-श्याम बोले.....२।।टेर।।

ना मैं चाहूँ, हाथी घोड़ा, ना काई बाजे वाला,
मुझको तो बस आज दिलादे, मोहन मुरली वाला,
बटन दबाते ही वो झट से, मुरली मधुर बजादे।।१।।
मोर मुकुट हो प्यारा प्यारा, मेरे मन बस जाये,
जो मुरली की धुन सुन ले वो, मस्ती में खो जाये,
पग में पायल, छम छम बाजै, सबको नाच नचादे।।२।।
नैणों से हो अमृत वर्षा, मन्द मन्द मुस्काए,
ठुमक-ठुमक जब चाल चले,मन मतवाला हो जाये,
एक बूंद उस अमृत रस की, मैया मुझे पिलादे।।३।।
श्याम सुन्दर मुरली वाले को, अपना आज बनाले,
मातृदत्त यदि मिले खिलौना, सोया भाग्य जगादे,
देर करो मत सुन मेरी मैया, जल्दी से दिलवादे।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : स्वरचित)

नीलो घोड़ो चालियो जी, कोई हीरां जड़ी रे लगाम,
आज मैं क्यां कै मान, मेरो बाबो पधार्‌यो है, आज..।।टेर।।

आ गयो भगतां रे भेलै, यो सजीलो साँवरो,
प्यास नैणां की बुझी और, मनड़ो हो गया बावरो,
घूँघरा छम छम बजे जद, भगतां तोड़े तान....आज।।१।।

आवो साँवरियो पधारो, थारी अगवानी करां, .
चोक चंदन को पुरावाँ, और मिजमानी करां,
जो हुक्म द्‌यो वो बजावाँ सेवा आठो याम....,आज।।२।।

म्हेर या म्हां पर करो थारो, नाम ना छूटे कभी,
और दर माँगण ना जाऊँ, मन कदे टूटे नहीं,
सारी दुनियाँ में *मगन* मन, गावै थारो नाम....,आज।।३।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

सिद्ध श्री शुभ उपमा, थाने पाँवा धोक प्रणाम जी,
समाचार एक बंचज्यो थाँसे भोत जरूरी काम जी,
ओ म्हारा खाटू वाला श्याम, ओ म्हारा नीले वाला श्याम।।टेर।।

ओ जी घणामान सूं लिख्या आज थारो,उत्सव एक मणानो है।
थोड़ो लिख्यो घणों समझोगा थानैं निश्चय आणो है,ओ म्हारा।।१।।

ओ जी सारा साथ है घणो खुशी, थारा नित की मंगल गावै है।
और बात सब ठीक ठाक पण थारी याद सतावै है,ओ म्हारा।।२।।

ओ जी सेवक थारा घणा उणमणा, था बिन भोत उदास जी।
जीमो हो तो चलू करोला, आकर म्हारे साथ जी ओ म्हारा।।३।।

ओ जी भूल चूक सब माफ करो, म्हानैं बेगा दर्शन दिज्यो।
दास *बिहारी* के नैणाँ म हरदम, बैठ्या रिज्यो ओ म्हारा।।४।।

o

।। श्री श्याम वन्दना ।।

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे,
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे, बनवारी।।टेर।।

झूठी दुनिया झूठे बन्धन, झूठी है ये माया,
झूठे साँसों का आना जाना, झूठी है ये काया,
ओऽऽऽऽ यहाँ साँचो तेरो नाम रे, बनवारी रे।।१।।
रंग में तेरे रंग गई गिरिधर, छोड़ दिया जग सारा,
आज मैं लेके संग चली हूँ, नाम का तेरे सहारा,
ओऽऽऽऽ मेरो बिगड्यो काम सँवार रे, बनवारी रे।।२।।
दर्शन तेरा जिस दिन पाँऊ, हर चिन्ता मिट जाये,
जीवन मेरा इन चरणों में आश के दीप जलाए,
ओऽऽऽऽ मेरी बाँह पकड़लो श्याम रे, बनवारी रे।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : दिल ही दिल में......(आज की आवाज)

झोलियाँ भरते हो सबकी, कुछ मुझे हासिल नहीं,
क्या मेरी किस्मत तुम्हारे, प्यार के काबिल नहीं।।टेर।।
लड़खड़ाती है जुबाँ अब, क्या सुनाए हाले दिल,
तुझको तो सब कुछ पता है, ऐसा तूँ जाहिल नहीं।।१।।
हाथ सर पर है तेरा फिर, होठो पर फरियाद क्यूँ,
सच बता दे तूँ नहीं क्या, नींद में गाफिल कहीं।।२।।
या तो मन की बात रखले, दिल को या फिर तोड़ दे,
इन भुलावों के भँवर में, क्या कोई साहिल नहीं।।३।।
हर तरह से कह चुका मैं, रोके हँस के हार के,
मन *मगन* में आ बसो तुम, सब मुझे हासिल यही।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

बैठ्यो खाटू में लगाकर दरबार, श्याम धणी राज करे।
थे तो कर देवो भक्तां रा बेड़ा पार, जो कोई अरदास करे।।टेर।।
कानां में थारे कुण्डल सोहे, गल वैजन्ती माला,
सिर पर थारे मुकुट विराजे, नैण लगे मतवाला,
अर्जी सुणसी म्हारो भी लखदातार, श्याम धणी राज करे।।१।।
करमा बाई को खिचड़ खायो,साग विदुर घर खायो,
म्हें भी बुलावां बाबा थानै, म्हारे घरां भी आओ,
त्याग्या दुर्योधन का मेवा करतार, श्याम धणी राज करे।।२।।
गांव गांव में शहर शहर में, पूजा होवै थारी,
म्हे भी खाली झोली ल्याया, भरदो झोली म्हारी,
म्हारै आँगणिया मं आओ सरकार, श्याम धणी राज करे।।३।।
अन्तर्यामी घट-घट वासी, थाने के समझाँवा,
भूल चूक की दाता थांसू, म्हे तो माफी चावाँ,
थे तो खोल देवो कुबेरा भण्डार, श्याम धणी राज करे।।४।।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

म्हारी अर्जी सुण कर आ जाइयो, नीले का असवार।
नीले का असवार, थारो नाम है लखतातार।
भक्ताँ का कष्ट मिटाजइयो, नीले का असवार, म्हारी..।।टेर।।

बाबा अर्ज सुणो थे सबकी, म्हारी नाव भंवर में अटकी,
अटकी नं पार लगा जइयो, लीलै का असवार, म्हारी।।१।।

थारो नाम सुण्यो जद आयो, द्वारे इक अर्ज लगायो,
अर्जी पे मर्जी सुणा जइयो, नीले का असवार, म्हारी।।२।।

म्हानैं रात्यूं नींद न आवे, म्हारी अँखिया नीर बहावे,
आँख्या ने दर्श करा जइयो, नीले का असवार, म्हारी।।३।।

म्हारे नैणां में बस जाओ, म्हाने छोड़ कठै ना जावो,
हिवड़ै मैं ज्योति जगा जइयो नीले का असवार, म्हारी।।४।।

बाबा मगन तेरे दर आयो, चरणाँ में शीश नवायो,
म्हारे सिर पर हाथ फिरा जइयो, नीले का असवार,म्हारी।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

थे तो श्याम बाग में झूला-झूलण चालो ओ सांवरिया
यो आयो महिनो सावण को।।टेर।।

नाचै मोर मोरणी मंगल गावै है,
कोयल मीठा-मीठा शब्द सुनावै है,
म्हानै पपीहा री बोली प्यारी लागै ओ सांवरिया, यो ।।१।।

खिल रह्या फूल गुलाब भँवर गुँजार करे,
हर डाली पर फूल कली से प्यार करे,
यो रिमझिम पानी बरसै बिजली चमकै ओ सांवरिया,यो ।।२।।

अंगूरां की बेल झूमती झूलै है,
मोतियन की सी बेल डाल पर झूलै है।
म्हाने हरी-भरी हरियाली प्यारी लागै ओ सांवरिया, यो।।३।।
हरियाली की चूनड़ फुलड़ा चमकै है,
दुल्हन सी सज रही दरश नै तरसै है।
म्हाने हरी भरी पोषाक पहर्‌या मिलग्यो ओ सांवरिया,यो।।४।।
म्हारि सूरतां कर श्रृंगार बाग मे जावै है,
सोहनलाल लोहाकार प्रभु का गुण गावै है।
म्हारी पलकां रा पालणां में झूलो ओ सांवरिया, यो।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुझे दिल में बन्द कर लूं.......(आसपास)

इस दर पे आ गया जो, लौटेगा कभी ना खाली,
लखदाता दे रहा है, भरवा लो झोली खाली।
लखदाता दे रहा है, भरवा लो झोलियाँ खाली,
कुछ हमको भी मिलेगा, आखिर हम भी है सवाली।।टेर।।
चौखट पे इनके जो भी जिद ठान के आया,
बिगड़े नसीब वाला भी हर मुराद पाया।
वो रखता करम के, बिगड़े ताले की ताली, लखदाता..।।१।।
मौका यही है मांगो जो कुछ है जिसके मन में,
हम मांगे गें सितारे, जितने है इस गगन में,
दामन में मेरे भरदे, तूं उतनी ही खुशियाली, कुछ...।।२।।
जी चाहे आजमालो, जितना भी अब सतालो,
रस्ते की खाक हूं मैं, चरणों से रौंद डालो,
फिर भी यहीं कहेंगे, करवा लेगें मन वाली, कुछ...।।३।।
आओ *मगन* बिखेरो, श्रद्धा के फूल पथ में,
दाता पधारेगें अब नीले सवारी कर के,
ना जाने फिर कब आये, ये मौका ये खुशियाली, लखदाता..।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

ले बाबै को नाम, बेड़ो पार करेगो,
भजले सुबह और शाम, बेड़ो पार करेगो।।टेर।।
श्याम धणी की भक्ति करले, हरदम ध्यान उसी का धरले
श्याम बाबो खाटू वालो भक्तां को वो है रखवालो
सार्‌या सबका काम, बेड़ो पार करेगो।।१।।
ज्योत कराँ और रात जगावां, श्याम बाबा को ध्यान लगावां
जब बाबा की म्हेर हो जासी, तो बैठ्यो ही मौज उड़ासी
ले मनड़े नं थाम बेड़ो पार करेगो ।।२।।
साँचो बाबो लखदातारी, महिमा ईंकी बड़ी है भारी
श्याम बाबा को ध्यान जो धरसी, वांरो सारो दुखड़ो हरसी
मिल ज्यासी आराम, बेड़ो पार करेगो।।३।।
जैसी भी कोई सेवा करसी, वैसो ही फल वाने मिलसी
देर है, पर अन्धेर नहीं हैं, *ताराचन्द* कहे बात सही है
जा बाबा के धाम बेड़ो पार करेगो।।४।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : घर आया मेरा परदेशी......)

आजा आजा श्याम धणी, क्यूं कर राखी देर घणी.......।।टेर।।
लोग कहे क्याँ को आवे, बिन आया या पत जावे
बात सभा बिच आन अड़ी आजा.......।।१।।
जै तूँ देर लगावे गो, कुण तेरे शरणे आवे गो
कैय्या रहसी बात बणी आजा........।।२।।
बिन आयाँ नहिं काज सरै, टाबर जीव उदास करै
पत राखो मेरी श्याम धणी आजा......।।३।।
लोक लाज सब हटा दियो, घट में दर्शन करा दियो
भगताँ के सिर मोर मणी आजा.....।।४।।
मेरे मन में आशा भारी आसी आसी गिरधारी
गीता न थारी आश धणी आजा......।।५।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

दीनों की पुकार सुन जो तू ना डोलेगा,
कोई भी ना तुझको दीना नाथ बोलेगा।।टेर।।
दीनबन्धु दीना नाथ दीन हित कारी,
दीन दुखियों की बस आश तुम्हारी,
दीनों के लिए ना जो दरवाजे खोलेगा, कोई ।।१।।
दीन फंसे है भँवर बीच तुम, मन्द मन्द मुस्काते हो,
विपदा में दीन दुखी तुम चैन की बंशी बजाते हो,
दीनों के जीवन में ना जो अमृत घोलेगा, कोई ।।२।।
पतित पावन कहलाते हो, पतितों को क्यों छोड़ दिया,
अधम उबारन श्याम प्रभु क्यों हमसे मुखड़ा मोड़ लिया,
दीनों के दुख दर्द में तू साथ न होगा, कोई ।।३।।

।। श्री श्याम वन्दना ।।

तर्ज : (मुहब्बत की झूठी....)

पता कुछ नहीं है, कहाँ जा रहा हूँ।
तूँ ले जा रहा है वहीं जा रहा हूं।।टेर।।
तूँ अंधे की लाठी, पता बेपता का।
मैं फल पा रहा हूँ, अपनी खता का।
कहाँ से कहाँ ठोकरें खा रहा हूं ।।१।।
कदम जो तेरे, आशियानें में रक्खा।
मजा खूब मैने तेरी उल्फत का चखा।
फनाँ हो रहा फिर भी रंग ला रहा हूं ।।२।।
तुम्हारे लिए मैंने छोड़ा जमाना।
मगर तुम भी करने, लगे हो बहाना।
मैं तिनके की जैसे बहे जा रहा हूं ।।३।।
सुनो *श्याम बहादुर*, कन्हैया रंगीला।
नां पहचान है *शिव*, तेरी लीला।
सितम दिलरूबा का सहा जा रहा हूं।।४।।

श्री श्याम बाबा की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे।। ॐ जय।।
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे।
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण परे।। ॐ जय।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे।। ॐ जय।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे।। ॐ जय।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग घुरे।
भक्त आरती गाये, जय जय कार करे।। ॐ जय।।
जो ध्यावे फल पाये सब दुख से उबरे।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरे।। ॐ जय।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत *आलूसिंह* स्वामी, मनवांछित फल पावे।। ॐ जय।।
जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे।
निज भक्तों के तुमने पूरण काम करे।। ॐ जय।।

•

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजे हनुमान लाला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जांके बल से गिरीवर कांपै, रोग दोष जांके निकट न झांके।
अंजनी पुत्र महाबलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका ऐसी कोटि समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर सब मारे, सियारामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, आनि संजीवन प्राण उबारे।
पैठी पाताल तोरि यम-का दर, अहिरावण की भुजा उखारे।
बांई भुजा सब असुर संहारे, दाहिनी भुजा सब सन्त उबारे।
सुर नर मुनिजन आरती उतारे, जय जय जय हनुमान जी उचारे।
कंचन थाल कपूर लौ छाई आरती करत अंजनी माई।
जो हनुमानजी की आरती गावे, बैठी बैकुण्ठ असर पद पावे।
लंक विध्वंस किये रघुराई, *तुलसीदास* स्वामी कीर्ति गाई।

•

।। श्री श्याम वन्दना ।।

हाथ जोड़ विनती करुँ, सुणज्यो चित्त लगाय।
दास आ गये शरण में, रखियो इसकी लाज।।
धन्य ढुँढारो देश है, खाटू नगर सुजान।
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण।।
श्याम-श्याम टो मैं रटूँ, श्याम है जीवन प्राण।
श्याम भक्त जग में बड़े, उनको करुँ प्रणाम।।
खाटू नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम।
फाल्गुन शुक्ला मेला भरे, जय जय बाबा श्याम।।
फाल्गुन शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय।।
उमापति लक्ष्मीपति सीतापति श्रीराम।
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के बाबा श्याम।।
पान सुपारी इलायची, इत्तर सुगन्ध भरपूर।
सब भक्तन की विनती, दर्शन देवो हजूर।।
आलूसिंह तो प्रेम से, धरे श्याम को ध्यान।
श्याम मण्डल पावे सदा, श्याम कृपा से मान।

• • •

आगामी एकादशी

	एकादशी	तिथि	वार
१.	श्रावण शुक्ल पक्ष पुत्रदा एकादशी	८-८-२००३	शुक्रवार
२.	भाद्रपद कृष्ण पक्ष जया एकादशी	२३-८-२००३	शनिवार
३.	भाद्रपद शुक्ल पक्ष पद्मा एकादशी	६-९-२००३	शनिवार
४.	अश्विन कृष्ण पक्ष इन्दिरा एकादशी	२२-९-२००३	सोमवार
५.	अश्विन शुक्ल पक्ष पापाङ्कुशा एकादशी	६-१०-२००३	सोमवार
६.	कार्तिक कृष्ण पक्ष रम्भा एकादशी	२१-१०-२००३	मंगलवार
७.	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रबोधनी एकादशी	४-११-२००२	मंगलवार
८.	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष उत्पन्ना एकादशी	२०-११-२००३	गुरूवार
९.	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष मोक्षदा एकादशी	४-१२-२००३	गुरूवार
१०.	पौष कृष्ण पक्ष सफला एकादशी	१९-१२-२००३	शुक्रवार
११.	पौष शुक्ल पक्ष पुत्रदा एकादशी	३-१-२००४	शनिवार
१२.	माघ कृष्ण पक्ष षट्तिला एकादशी	१८-१-२००४	रविवार
१३.	माघ शुक्ल पक्ष जया एकादशी	२-२-२००४	सोमवार
१४.	फाल्गुन कृष्ण पक्ष विजया एकादशी	१६-२-२००४	सोमवार
१५.	फाल्गुन शुक्ल पक्ष रंगभरी एकादशी	२-३-२००४	मंगलवार
१६.	चैत्र कृष्ण पक्ष पापमोचनी एकादशी	१७-३-२००४	बुद्धवार
१७.	चैत्र शुक्ल पक्ष कामदा एकादशी	१-४-२००४	गुरुवार
१८.	वैशाख कृष्ण पक्ष बरुथिनी एकादशी	१५-४-२००४	गुरुवार
१९.	वैशाख शुक्ल मोहिनी एकादशी	१-५-२००४	शनिवार
२०.	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अचला एकादशी	१४-५-२००४	शुक्रवार
२१.	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष निर्जला एकादशी	३०-५-२००४	रविवार
२२.	आषाढ़ कृष्ण पक्ष योगिनी एकादशी	१३-६-२००४	रविवार
२३.	आषाढ़ शुक्ल पक्ष हरिशयनी एकादशी	२९-६-२००४	मंगलवार
२४.	श्रावण कृष्ण पक्ष कामदा एकादशी	१२-७-२००४	सोमवार

श्री श्याम मंदिर में आयोजित एकादशी जागरण प्रायोजक सूची

१. श्री महेष चौधरी
२. श्री श्रीकृष्णजी तोदी
३. श्री सत्यनारायण जी शर्मा
४. श्री संजय प्रकाशजी सरावगी, सासाराम
५. श्री हरि भगवान जी अग्रवाल
६. श्री ओंकारमल तोदी
७. श्री उमा शंकर अग्रवाल
८. श्री रवि सर्राफ, कोलकाता
९. श्री अनूप जी सर्राफ
१०. श्री विजय मोदी
११. श्री प्रमोद बजाज
१२. श्री जगदम्बा तुलस्यान
१३. श्री गोपाल कृष्ण मिश्र देवज्ञ
१४. श्री अरुणजी बैरोलिया

वर्ष पर्यन्त प्रत्येक माह की कृष्ण पक्ष एकादशी के प्रायोजक
श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल
मलदहिया, वाराणसी

मण्डल द्वारा प्रत्येक रविवार को सायं ५ बजे से ७ बजे तक भजन संध्या का आयोजन श्री श्याम मन्दिर, लक्सा, वाराणसी में किया जा रहा है।

भक्तों के निवास पर आयोजित कीर्तन

१. श्री दामोदर जी शर्मा, नारायणपुर
२. भारत विकास परिषद् "शिवम' वाराणसी
३. श्री बैजनाथ जी भालोटिया "
४. श्री दीपक जी बजाज "
५. श्री श्रीकृष्ण जी तोदी "
६. श्री सत्यनारायण जी सिंधी "
७. श्री गोपाल शर्मा 'मगन' "
८. श्री मुरारीलाल जी झुंझुनवाला"
९. श्री सज्जन अग्रवाल गिरीडीह
१०. श्री पवन कुमार अग्रवाल
११. श्री सुभाष जी शर्मा
१२. श्री सत्यनारायण चूडीवाल
१३. श्री श्रीकृष्ण कुमार मित्तल भदोही
१४. श्री अरविन्द शर्मा वाराणसी
१५. श्री सत्यनारायण जी सिधी-"
१६. श्री गोपाल जी शर्मा वाराणसी
१७. श्री विश्वनाथ सोंथलिया "
१८. श्री प्रकाश जी मोदी "
१९. श्री महेष कुमार लोहिया "
२०. श्री अरुण कुमार मस्करा "
२१. श्री बनवारी लाल सुन्दरका "
२२. श्री प्रकाश जी मालवीय "

श्री श्याम मण्डल झूलनोत्सव २००३ हेतु गठित उपसमिति

स्वागताध्यक्ष	– श्री मातादीन अग्रवाल एवं श्री रमेश चौधरी
संयोजक	– श्री राजकुमार बुबना एवं श्री जगदम्बा प्रसाद तुलस्यान
सह-संयोजक	– श्री पवन कुमार अग्रवाल एवं श्री महेश कुमार सुरेका

विभागीय संयोजक

अर्थ-संग्रह	– श्री प्रमोद बजाज
कोष संचालन	– श्री दीपक तोदी
श्रृंगार व्यवस्था	– श्री जयप्रकाश गाड़ोदिया,
भजन संग्रह	– श्री कमल केडिया
कीर्तन संचालन	– श्री संदीप शर्मा "कानू"
प्रचार व्यवस्था	– श्री संजय छावछरिया
ज्योति संचालन	– श्री महाबीर प्रसाद हिम्मतसिंहका
रूद्राभिषेक	– श्री विजय महर्षि
प्रशासनिक व्यवस्था	– श्री गौरीशंकर तुलस्यान
कार्यालय व्यवस्था	– श्री जगत अग्रवाल
पण्डाल व्यवस्था	– श्री विजय मोदी
अतिथि सत्कार	– श्री अरुण कुमार बैरोलिया
सवामणी प्रसाद वितरण	– श्री गंगाप्रसाद धानुका
पाकशाला	– श्री विनोद खेमका
सेवा विभाग	– श्री पवन पाण्डेय
प्रसाद पैकिंग	– श्री नारायण लोहिया

झूलनोत्सव उपसमिति सहयोगी गण

सर्व श्री उमाशंकर अग्रवाल, विजय अग्रवाल, विजय पंसारी, गणेश प्रसाद लोहिया, राजकुमार तोदी, मदन मोहन पोद्दार, दीपक बजाज, अरूण सरावगी, गोपाल अग्रवाल, रमेश वर्मा, महेन्द्र जाखोड़िया, विश्वनाथ सोन्थालिया, शिव कुमार अग्रवाल, निरंजन झुनझुनवाला, कमल मित्तल, काशीनाथ मिश्रा, प्रदीप जयपुरिया, पुरूपोत्तम मोहले, राजेश तुलस्यान, विजय बिहानी, कैलाश अग्रवाल, हरि प्रसाद मुरारका, किशन नवलगढ़िया, रामकुमार बूबना, कैलाश शर्मा, संजीव अग्रवाल, प्रेम अग्रवाल, सजन सिंघी, प्रकाश, सुशील, बिल्लु पोद्दार, जय प्रकाश पाटोदिया, प्रकाश मोदी, भरत सर्राफ, चंद्र प्रकाश चिरानियां, रवि कानोडिया, राजेश पोद्दार, देवेन्द्र प्रकाश शर्मा (बब्बू), कमल केडिया, विनोद नवलगढ़िया, दीपक शर्मा, सुशील गाड़ोदिया, गोपाल पारिख, हनुमान पेड़िवाल, संजय शर्मा, सूर्योदय शास्त्री, महाबीर सरावगी, सत्यनारायण तोदी, दामोदर शर्मा, गोपी कृष्ण मोरोलिया, सीताराम पंसारी, शम्भूनाथ मिश्रा, गणेश लोहिया, प्रमोद मानसिंहका, युगल किशोर जयपुरिया, राजेश धानुका नवरतन राठी, सुरेश तुलस्यान श्याम बूबना, संदीप दूबे, प्रदीप जाजोदिया, अरविन्द डिडवानिया, विजय सिंघानिया, संतोष अग्रवाल, सुशील लोहिया, विमल पोद्दार, पुरूषोत्तम क्याल, प्रवीण अग्रवाल, भरत शर्मा, देवेश नितेश अड़िचवाल, राकेश अग्रवाल, राकेश भारद्वाज, अमित जोशी, कमल मित्तल, विजय सरावगी, मुरारी लाल धानुका, संतोष तोदी, मदन अग्रवाल, रंजन तुलस्यान, भगवती शर्मा, मोहन लोहिया, कन्हैय्या लोहिया, विकास लोहिया, अमित लोहिया, विनय कुमार धानुका, मनिक चंद धनुका, सुरेश कुमार धानुका, संतोष कुमार (सगुन) संजीव जालान, विष्णु पचेरिवाल, जयशंकर शर्मा, चन्द्र मोहन शर्मा, जय प्रकाश शर्मा, राहुल पचेरिवाल, प्रशांत बेरोलिया एवं सुभाष शर्मा।

मैं. श्री श्याम मण्डल,
डी0 52/7, लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी

आय-व्यय खाता वर्षांत दिनांक 31-03-2001

व्यय	धनराशि
एकादशी खर्च	29,836.00
रात्रि जागरण (कीर्तन खर्च)	10,535.00
गवरजा माता शोभा यात्रा खर्च	2,150.00
बैंक कमीशन	97.00
वेतन खर्च	5,500.00
प्रचार खर्च	220.00
प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी खर्च	2,010.00
बर्तन मरम्मत खर्च	4100.00
निशान शोभा यात्रा एवं फाल्गुन महोत्सव खर्च	46,815.00
वाद्य संगीत यंत्र मरम्मत खर्च	4,927.00
श्याम झूलनोत्सव खर्च	3,20,979.00
मित्र मण्डल कलकत्ता के आगमन पर स्वागत खर्च	3,420.00
नन्दू जी के वाराणसी आगमन पर स्वागत खर्च	5,000.00
सवारी खर्च	110.00
आय का व्यय पर आधिक्य	112,344.75
	5,48,043.75

स्थान : वाराणसी
दिनांक 27/03/2002

वास्ते मैं. श्री श्याम मण्डल
अध्यक्ष - कोषाध्यक्ष

M. Sonthalia & Associates
CHARTERED ACCOUNTANTS

BHAGWAT BHAWAN
B. 37/115-116 (1) Beniram Bagh
Rathyatra Crossings, Varanasi- 221010
Phone : 362443, 360030 (O)
360003, 363174 (R)

आय	धनराशि
बर्तन भण्डार सहायतार्थ	26,233.00
निशान शोभा यात्रा एवं फाल्गुन महोत्सव	25,509.00
चढ़ावा : रात्रि जागरण चढ़ावा	25,704.75
श्री श्याम झूलनोत्सव चढ़ावा	31504.00
एकादशी व्यवस्था	57,208.75
श्री श्याम झुलनोत्सव सहायतार्थ	25,450.00
बैंक व्याज	3,74,919.00
	38,724.00
	5,48,043.75

वास्ते : एम.सोन्थालिया एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स. (साझेदार)

मैं. श्री श्याम मण्डल,
डी0 52/7, लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी

वार्षिक चिट्ठा दिनांक 31-03-2001

पूँजी एवं दायित्व	धनराशि	धनराशि
स्थायी कोष-		
पिछला बाकी	5,98,121.89	
जोड़ा- आय का व्यय पर आधिक्य	1,12,344.75	7,10,466.64
भवन निर्माण कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		18,50,856.75
चाँदी कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		93,557.50
खाटू भवन निर्माण		5,19,501.00
सावधि जमा बाबत एकादशी (पिछले वर्ष के अनुसार)		10,500.00
सिंहासन कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		9,900.00
श्याम बगीची निर्माण कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		75,600.00
बर्तन भण्डार अमानत (पिछले वर्ष के अनुसार)		1,510.00
श्री सत्यनारायण जी का जमा		69,500.00
		33,41,391.89

स्थान : वाराणसी
दिनांक 27/03/2002

वास्ते मैं. श्री श्याम मण्डल
अध्यक्ष - कोषाध्यक्ष

M. Sonthalia & Associates
CHARTERED ACCOUNTANTS

BHAGWAT BHAWAN
B. 37/115-116 (1) Beniram Bagh
Rathyatra Crossings, Varanasi- 221010
Phone : 362443, 360030 (O)
360003, 363174 (R)

सम्पत्ति	धनराशि	धनराशि
मकान भवन लागत		19,91,886.90
चाँदी मुकुट एवं श्रृंगार सामग्री		19,400.00
चाँदी बर्तन		82,185.00
वाद्य संगीत - पुराना	34106.00	
जोड़ा : नया खरीद	1,000.00	35,106.00
फर्नीचर		8,476.00
जेट पम्प		6,400.00
जनरेटर		21,500.00
श्याम बगीची हेतु जमीन खरीद अग्रिमराशि		31,000.00
बर्तन भण्डार - पुराना	1,64,191.90	
जोड़ा - बर्तन खरीद	14,355.00	1,78,546.90
बर्तन खरीद बाबत अग्रिम राशि		3,000.00
खादू भवन जमीन खरीद		8,14,500.00
विविध देनदार – (अनुसूची 1 के अनुसार संलग्न)		95,456.74
रोकड़ एवं बैंक बाकी –		
विजया बैंक (एफ.डी.आर.)	11,570.00	
स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर-खादू	1,100.00	
विजया बैंक, वाराणसी	7,307.80	
केनरा बैंक, एस.बी.खाता	675.05	
रोकड़ बाकी नगदी	33,281.50	33,[illegible]

वास्ते : एम.सोन्थालिया एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, (साझेदार)

मैं. श्री श्याम मण्डल,
डी0 52/7, लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी

आय-व्यय खाता वर्षांत दिनांक 31-03-2002

व्यय	धनराशि
एकादशी खर्च	32,850.00
रात्रि जागरण (कीर्तन खर्च)	13,491.00
प्रचार खर्च	490.00
छपाई एवं स्टेशनरी खर्च	240.00
बर्तन मरम्मत खर्च	4,310.00
निशान शोभा यात्रा एवं फाल्गुन महोत्सव खर्च	40,480.00
वाद्य संगीत यंत्र मरम्मत खर्च	5,455.00
श्याम झूलनोत्सव खर्च	3,13,289.00
मित्र मण्डल कलकत्ता के आगमन पर स्वागत खर्च	7,350.00
श्री श्याम जी खाटू भवन खर्च	5,350.00
डूबत खाते ऋण	8,702.00
श्री आलू सिंह जी की पुण्यतिथि पर खर्च	1,050.00
आय का व्यय पर आधिक्य	53,266.00
	4,86,323.00

स्थान : वाराणसी
दिनांक 21/03/2003

वास्ते मैं. श्री श्याम मण्डल
अध्यक्ष - कोषाध्यक्ष

M. Sonthalia & Associates
CHARTERED ACCOUNTANTS

BHAGWAT BHAWAN
B. 37/115-116 (1) Beniram Bagh
Rathyatra Crossings, Varanasi- 221010
Phone : 362443, 360030 (O)
360003, 363174 (R)

आय	धनराशि
बर्तन भण्डार सहायतार्थ	11,638.00
निसान शोभा यात्रा एवं फाल्गुन महोत्सव	33,200.00
रात्रि जागरण चढ़ावा	53,093.00
श्री श्याम झूलनोत्सव सहायतार्थ	3,60,192.00
एकादशी व्यवस्था	28,200.00
	4,86,323.00

वास्ते : एम.सोन्थालिया एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स. (साझेदार)

मं. श्री श्याम मण्डल,
डी0 52/7, लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी

वार्षिक चिट्ठा दिनांक 31-03-2002

पूँजी एवं दायित्व	धनराशि	धनराशि
स्थायी कोष-		
पिछला बाकी	7,10,466.64	
जोड़ा- आय का व्यय पर आधिक्य	53,266.00	7,63,732.64
भवन निर्माण कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		18,50,856.75
चाँदी कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		93,557.50
खाटू भवन निर्माण (पिछले वर्ष के अनुसार)		5,19,501.00
सावधि जमा बाबत एकादशी (पिछले वर्ष के अनुसार)		10,500.00
सिंहासन कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		9,900.00
श्याम बगीची निर्माण कोष (पिछले वर्ष के अनुसार)		75,600.00
बर्तन भण्डार अमानत (पिछले वर्ष के अनुसार)		1,510.00
		33,25,157.89

स्थान : वाराणसी
दिनांक 21/03/2003

वास्ते मं. श्री श्याम मण्डल
अध्यक्ष - कोषाध्यक्ष

M. Sonthalia & Associates
CHARTERED ACCOUNTANTS

BHAGWAT BHAWAN
B. 37/115-116 (1) Beniram Bagh
Rathyatra Crossings, Varanasi- 221010
Phone : 362443, 360030 (O)
360003, 363174 (r)

सम्पत्ति	धनराशि	धनराशि
मकान भवन लागत		19,91,886.90
चाँदी मुकुट एवं श्रृंगार सामग्री		19,400.00
चाँदी बर्तन		82,185.00
वाद्य संगीत- पुराना	35106.00	
जोड़ा : नया खरीद	1,700.00	36,806.00
फर्नीचर		8,476.00
जेट पम्प		6,400.00
जनरेटर		21,500.00
श्याम बगीची हेतु जमीन खरीद अग्रिमराशि		31,000.00
बर्तन भण्डार - पुराना	1,78,546.90	
जोड़ा - बर्तन खरीद	1,250.00	1,79,796.90
बर्तन खरीद बाबत अग्रिम राशि		3,000.00
खाटू भवन जमीन खरीद		8,14,500.00
साइकिल (वर्ष में खरीद)		1,100.00
विविध देनदार –		
(अनुसूची 1 के अनुसार संलग्न)		98,326.74
रोकड़ एवं बैंक बाकी –		
विजया बैंक (एफ.डी.आर.)	11,570.00	
स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर-खाटू	1,100.00	
विजया बैंक, वाराणसी	7,307.80	
केनरा बैंक, एस.बी.खाता	939.05	
रोकड़ बाकी नगदी	4,863.50	25,780.35
अग्रिम : प्रिन्टंग एवं स्टेशनरी बाबत अग्रिम		5,000.00
		33,25,157.89

वास्ते : एम.सोन्थालिया एण्ड एसोसिएट्स
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स. (साझेदार)

श्री श्याम मंडल डी0 52/7 लक्ष्मी कुंड-वाराणसी

वस्तु मण्डार सूची

नाम वस्तु.	मात्रा	नाम वस्तु	मात्रा	नाम वस्तु	मात्रा
स्टेनलेस स्टील					
थाली बड़ी	३३८	वफे सेटकम्पलीट	१५	कहाड़ी (बड़ीछोटी)	१०
थाली छोटी	१३	परात (बड़ीछोटी)	३	खल-मूसल	५
कटोरी (बड़ीछोटी)	१३९०	सब्जी डब्बू	२	झरिया	१०
गिलास	६००	खोमचा (थाल)	१२	झरना (बूंदी छानने वाला)	४
छन्नी (प्लेट नाश्तेवाली)	२४७	कंडाल छोटा (टोंटी दार)	१	घी का डब्बू	४
चम्मच छोटी	७५२	गिलास स्टैन्ड (थाली वाला)	४	सब्जी का डब्बू	५
		तांबा			
चमचा बड़ा	७८	गंगासागर -	२	गिलास सैन्ड (तारका)	४
सागदान	१९	पीतल-		लकड़ी-	
रायतादान	२०	परात बड़ी	७	चकला	१४
जग	८१	परात छोटी	१६	बेलन	२६
टेनिया	६३	खोमचा	३	थाम	४
टोपिया (बड़ाछोटा)	१२	टोपिया	९	कूँचा	१
राइस प्लेट	४२	लोटा	१		
फुल प्लेट	४५१	अलम्यूनियम		अन्य	
दही बड़ा प्लेट	३२९	टोप (बड़ाछोटा)	४८	गैस चूल्हा (स्टैन्ड वाला)	१२
पान ट्रे (प्लेन)	१८	ढक्कन " "	४०	गैस चूल्हा (बैठकी वाला)	२
पान ट्रे (खानेदार)	११	चाय केतली	५	पातिया छोटा	१०
पंजा	२४	चाय सासपेन	४	पातिया बड़ा	२
चटनी डोगा	७	लोहा		तराजू-बटखरा	१
चाय टंकी	७	कंडाल	१०		
चाय कप	८६	किस्ती	६३	वर हेतू-	
चाय गिलास	१३७	बाल्टी	१८	छतर	१
टंकी बड़ी	१	नाव	१९	कंढा	३
टंकी छोटी	१	तावा	६	कलगी	३
चमचा (खीर वास्ते)	३	तई	२		
बाल्टी (बड़ीछोटी)	१९	चिमटा	१४		
लोटा	७	कूँचा	२		

पुस्तक वितरण केन्द्र

- **श्री सुमन कुमार सिंघी**
  मेसर्स एस. कु. सजन कु. टेक्स. कं.लि.
  सी.के. 19/4 ठठेरी बाजार, वाराणसी
  फोन 2420470 (का.), 2275367 (नि.)
- **श्री श्रीकृष्ण तोदी**
  मेसर्स राणीसती टेक्सटाइल्स
  डी. 13/27 बाँसफाटक, वाराणसी
  फोन 2401767 (का.), 2327125 (नि.)
- **श्री प्रमोद बजाज**
  सीके, 23/11, रानी कुंआ, चौक,
  फोन 2328370, 2392909
- **श्री सत्यनारायण शर्मा**
  मेसर्स नीलकण्ठ स्टील ट्यूब
  सी. 21/3 बी-4-1 मलदहिया, वाराणसी
  फोन 2207117, 2224282
- **श्री अशोक गिनोडिया**
  मेसर्स जनरल फर्नीचर
  जंगमबाड़ी-वाराणसी
  फोंन 2451135 (का.), 2351316
- **श्री राज कुमार तोदी**
  मेसर्स फिल्म सिने हाऊस
  जयपुरिया भवन, गोदौलिया-वाराणसी
  फोन 2352718 (का.), 2352126 (नि.)
- **श्री कुमार नीरज**
  कुमार एंड एसोसिएट्स
  एस.आर. 8, पी.सी.एफ. प्लाजा,
  (प्रथम तल) नदेसर, वाराणसी
  फोन. 2508558, मोबा. 9415204209
- **श्री विजय अग्रवाल**
  मेसर्स आनन्दराम बासुदेव प्रसाद
  विद्यापीठ रोड-वाराणसी
  फोन-2220263 (का.), 2208163 (नि.)
- **श्री राम बूबना**
  कंचना सारीज
  सी.के.56/18 गोविन्दपुरा चौक वाराणसी
  फोन- 2404995 (प्रति) मो. 3117131
- **श्री अरुण बैरोलिया**
  बिगेस्ट क्रिएशन, लक्खी चौतरा-वाराणसी
  फोन- प्रति. 2354456; नि. 2275363
- **श्री दौलत राम**
  पापुलर सां मिल
  बी. 12/119 भेलूपुरा, वाराणसी
  फोन- 3393169, 2324315
- **श्री गीता सा मिल एण्ड को0**
  श्री बाबू भाई पटेल, श्री समीर पटेल
  बी. 15/36 सोनारपुरा, वाराणसी
  फोन- 2454102, 2454202 (प्रति.)
- **श्री जगदम्बा तुलस्यान**
  संगम सरीज
  छोटी गैबी, वाराणसी
  फोन- 2401910; मोबा. 9839145667
- **श्री गोपाल अग्रवाल**
  अग्रवाल ट्वाय इम्पोरियम
  डी.10/56 विश्वनाथ गली (प्रथम तल)
  वाराणसी फोन-2393550 (प्रति.)
  2327391 (नि.)

पुस्तक वितरण केन्द्र

- श्री अरुण लडिया
  गौरव टेक्सटाइल्स मिल
  राधाकृष्णबाग पाली मारवाड़
  09414121531/ 02932258531
- श्री सांवरमल
  सात्यम इंटरप्राइजेज 52- वेस्टनस्ट्रीट
  प्रथम तल कमरा नं0 109 कोलकाता
- श्री चम्पालाल बासुकी नाथ
  214/216 जमुनालाल बाजाजस्ट्रीट
  कोलकाता फोन- 2300502
- श्री सत्यनारायण सुरेका
  डी.-2 कृष्णा नगर
  गांधी नगर मोड- टोंकरोड
  जयपुर फोन- 2519980
- श्री ओम प्रकाश जी केजरीवाल
  सुनील टेक्सटाइल फोन. 2285783
  चास- बोकारो
- श्री प्रह्लाद राय मुरलीधर
  मिहीपुखो एवं बहराइच
  फोन. 244430 - 233394
- श्री श्याम नारायण बेरिया
  नागरमल सत्नारायण
  चित्राटोली-आरा
  बिहार फोन. 221857
- श्री राम अवतार पोद्दार
  1/1 वंशीट्रेट रोड (द्वितीय तल)
  कोलकाता फोन- 22480672, 22483250
- श्री नन्द किशोर जी शर्मा (नन्दूजी)
  मे0 ग्वालियर स्वीट्स प्राइवेट लिमिटेड
  नवरंगपुरा, अहमदाबाद
  फोन 6431895 (प्रति0) 6850238 (नि.)
- श्री बसंत बेरोलिया
  श्री महावीर जी राइस एण्ड आयल मिल
  डोनार रोड -दरभंगा-बिहार
  फोन- 222389 (प्रति.), 222144 (नि.)
- श्री कैलाश कुमार अग्रवाल
  सत्यदेव गंज- बक्सर
  फोन- 22491-22598
- श्री राधेश्याम गोयल
  जी- 115 अशोक बिहार दिल्ली -52
  फोन. 2910359 - 7218361
- श्री पवन कुमार गोयल
  अंकुर वस्त्रालय
  आनन्द मार्केट स्टीलगंज- बहराइच
  9415036834- आ. 0525232425
- श्री श्याम ग्रुप
  44 बसन्त विहार पाली मारवा
  फोन- 220478
- श्री विजय कुमार मोदी
  लिनोनियम हाऊस 39/21टाऊनहाल
  बिल्डींग- गोलघर गोरखपुर
- श्री पवन जी अग्रवाल
  अमिनंदन -
  गीताप्रेस रोड- गोरखपुर
  फोन. 2330649, 2335937
- श्री मधुसूधन ट्रेडिगं कं. इचलकरंजी
  अनामिका टेक्सटाइल्स
  राधाकष्ण बाग पाली मारवाड़ 25889
- श्री विजय तुलस्यान
  तुलस्यान यार्न ट्रेडर्स,
  चौक- मऊनाथभंजन
  2220035 (प्रति0) 2220251 (नि.)